

मज्झिम निकाय
अ. १०. १२



धर्मरत्न बजाजगं नरत श्री महाविहार

DH311

यस्य ही कर्म कृत्वा कुरुवा नाही कुरुवा कुरुवा नाही हगलि कर्म नाह वा म हा स ए म या ध उं क हि ध क ति न प म क र्वा स ए वा व ने म स्य
कं तु स मं यो ग नृ प कं जा नृ गं जा ने म हि ध क नृ धा नृ पं म या कृ वं प या ज न ध य मि क्क ह र म् जा या ग प सा ध कं ल य धि य सो को द वी सं ला वं व र्
चा व की म क मा ला म ना व र्वा आ का ना श य क वि उ र्वा अ थ ग म ल कं वा क्का क व च म क र्वा स म चि तं प र्क का उ व म ल स्य ग दा वा ना हि वा म न ड ग ड य
हि व न या गि न्या ना डि का या म् व रं प रं ग दा स फ ति स ह पु र्म म ध्य ना वा व धु कि कां वा स र्व न वा व धु ना श वा य वा ल व य स हि रं ग क ला वा ना हि वि ह य ना य
का च प वं प दं व र्वा दि पु थ मं ना म म् व र्वा च क व जी कां प रं म या लु म क्का क म थ वा हि न्ना हि न्ना र्वा य सिं का ले ज स र्वां ना सि न्को ल वृ वा ग वा न या
सा ग हि य वा य व ना हि म् व र्वा ह व र्वा र्वा वि स र्वां ना सि दा स ना नं या गि ती वी द ना य की गं ज उ ड र्वा व र्वा य न स च क पु र्वा श वा गि ती ग अ वि प र्वा च ल यो द
वी म या स ह रु या गि ती ग वा ल न वा का व क उ वा म न जा क व स हि रं प व र्वा म क वि र्वा कु या गि मो र्वा व हि र्वा र्वा क र्वा र्वा चू न ह नं ल व य वि वि धा

२

ऊ नेश ना गीं पु नृ व का ल कुरु यो हि अ ऊ नं प रं ग क र्वा क म हा वि यां लि षा क ला व ना ल नां यदि अं ये वा च ना ना हं ना हि पि अं म ध गु म क र्वा उ ड र्वा सा म्
ग ल क र्वा क र्वा न दि वा प र्वा क र्वा अ न म का स व ना प र्वा म क र्वा ग म र्वा ना म्वा हं ना हि पि सा ह ना ल म थ न्ना व ना म क्का नि रु द्वा क र्वा अ न्ना अ न्ना प
र्वा क र्वा न स अ म्वा र्वा य र्वा ना व ना जा व र्वा दा य र्वा ना हि वा या सा दि हि पि ० अ म ध ना ह हि पि य वा य स ने पि उ वी द अ ना वा ना ह ना म ह न वा
म क र्वा र्वा अं स च व ना ही वी अं ग अ ना व क र्वा ना ह व र्वा ह म मि क र्वा ना धि न न्ना व र्वा वा ना य व र्वा यदि अं वी अ न्ना र्वा क र्वा अ न्ना म्वा ना न्ना द स र्वा
अ स न र्वा र्वा अ ल प द अ क र्वा न स हि अ दी य ना न्ना च क र्वा म च व ना वा अ ना हा म्वा स ना ० अ न्ना उ स र्वा गि हा क र्वा ना ह न द स र्वा क र्वा ल
च र्वा हि मा र्वा स र्वा म थ अ ना ग र्वा ना स हा व र्वा न क र्वा हि गि गु म्वा म्वा ना व र्वा क र्वा अ न्ना उ व ० उ ना हा ग र्वा ना व र्वा ना व र्वा वि हि मा य न्ना उ स
क र्वा न न्ना उ व ह स र्वा न्ना उ प वि र्वा हि अ र्वा धि क जाल र्वा पू न्ना र्वा द वा ज र्वा च व र्वा व र्वा वि र्वा हि र्वा ना वा हि चि र्वा र्वा

३

॥ अटिताकावयो रगनडयन्त्रकमहावनां ॥ उधेधुं मयकृदं प्राणिनाममुल्लयना ॥ १ ॥ मध्यदिदलकालं वा राही मनुलाधिप ॥ ३ ॥ अंश ॥ इति
मकुंभाकायवाकानि रूमयुलं ॥ स्वर्गमर्त्यं च पातालमकर्मार्हे ॥ हवत्तु भवत् ॥ दिदलाकावयागनदिदलमेकमचवत् ॥ सर्ववीनसमायागकालम्
स्त्रीमकुंभसूखं रोचयाग ॥ भवत्तु ॥ अथ विषयात्मकस्तथा ॥ १ ॥ देवीवागहिसे नकुंभसूखं हवत्तु कल्पयत् ॥ भवत्तु मध्यदिदलमेकमचवत् ॥ सर्ववीनसमायागकालम्
कृपापथकाविश्वमृपायक ॥ भवत्तु ॥ अथ गनडमहाहागमयुल्लयागमरूमं ॥ अथ विषयात्मकस्तथा ॥ १ ॥ देवीवागहिसे नकुंभसूखं हवत्तु कल्पयत् ॥ भवत्तु मध्यदिदलमेकमचवत् ॥ सर्ववीनसमायागकालम्
लाकालसूखदिप ॥ १ ॥ हवत्तु ॥ अथ गनडमहाहागमयुल्लयागमरूमं ॥ अथ विषयात्मकस्तथा ॥ १ ॥ देवीवागहिसे नकुंभसूखं हवत्तु कल्पयत् ॥ भवत्तु मध्यदिदलमेकमचवत् ॥ सर्ववीनसमायागकालम्
त ॥ १ ॥ अथ गनडमहाहागमयुल्लयागमरूमं ॥ अथ विषयात्मकस्तथा ॥ १ ॥ देवीवागहिसे नकुंभसूखं हवत्तु कल्पयत् ॥ भवत्तु मध्यदिदलमेकमचवत् ॥ सर्ववीनसमायागकालम्
॥ अथ गनडमहाहागमयुल्लयागमरूमं ॥ अथ विषयात्मकस्तथा ॥ १ ॥ देवीवागहिसे नकुंभसूखं हवत्तु कल्पयत् ॥ भवत्तु मध्यदिदलमेकमचवत् ॥ सर्ववीनसमायागकालम्

का॥ सर्वधर्मप्रविहृतं तावता नैव तावतां ॥ महासुखादि संवाधि महाभूषणपरादा तथा ॥ धर्मकृतावता नायकस्य दिदं पुदार्तिनं ॥ सङ्गुभा वृषदण्डनरु
 धरुवर्तिनायथा ॥ यागिनि सर्ववृक्षा नां न वंजावपुतिस्त्रिंशं ॥ कायवाक्किरुसंकर्म सर्वकार्ये कयागिनीनां ॥ वामाहो सुखचनं वाधि मवायमनिदर्शनं ॥
 ब्रह्मं सर्ववृक्षा नां श्रीवर्तनं स्वचनं च ॥ स्ताधिष्ठानकमाक्रयस्वरुदरसङ्गुभा कौशलात् ॥ ॐ ह्राहृगवां वजीरुमिहादगहिष्ठपुत्रुद्व ॥ अङ्गनपुत्री
 आदिगङ्गकपेव तत्तगश ॥ सत्तमत्ययतनं सर्वमसत्तास्यादिदं रुवंशं ॥ नरुनहं वदरुत्तामाय्यस्वप्रसूतागतत्ता ॥ ॐ दंयकु महाहागकर्मांशं च यथा
 रुवद्व ॥ वामप्रसूतं रुत्तावजवागोहिलज्जगं ॥ यथेमपूचचकषति गर्भं कथार्त्तपिव ॥ मानवां सर्वदेवादिमाचनकषसर्वदा ॥ ॐ ॥ आह ॥
 कवगविचित्रीग रुवंशिजलरुदुतगह ॥ ॐ श्री ॥ यदनाम नम्रं सनमम्रुमहि म्रुगम्रुगान ॥ ॐ पृथि ॥ ॐ म्रुगसम ॥ सगह ॥ ॐ म्रुगहा ॥ ॐ म्रुगा ॥ क
 मरुतु ॥ ॐ म्रुवीगविम ॥ ॐ ह ॥ ॐ म्रुलगन ॥ ॐ मरुकवीम्रुगसन्तमेनम्रु ॥ हवक ॥ ॐ म्रु ॥ म्रुगामपूक ॥ ॐ म्रुगाम्रुतिगत ॥ ॐ सानम्रु ॥ धव ॥ ॐ विगचने ॥ म

द्वाभमासाह हानि (अवास्तिथिदिनि) यदुभयदिन्दवाजीविनयः। विषुवचक्रं मांलित्य सफटिं। जुहन्ति ॥ अथ यश्च प्राप्तिवायाश्च विना
 लं चक्रं मांलिखत्। पंचाहपंचविंशत्योक्तं नालं घृहनाशः। नाकाशः पाठः संख्या यश्च कथां साधनमूयतः। यश्च पाठनवाहानि यदि
 वा स्यान्ति लं कमात्। गुहापाठे चतुर्विंशत्येव हस्त्यवस्तनः। यद्वा कथा समं च्छादितानि पवित्राणि कः। गुहापाठे चतुर्विंशत्येव हस्त्यवस्तनः
 वस्तनः ॥ पाठः गमं कथं सफटमहं वाकिमान्तरः। मूला दशमहं मकाशविंशतिवदिवं कमात्। गुहिकर्कदिनमूलादेवति यथा यमात् पश्च
 ॥ श्रीकृष्णपति कालयेन ममति नगं सयः। जुहन्ति चतुर्विंशत्येव हस्त्यवस्तनः। गुहापाठे हि नष्टं धर्तुं नाकयस्यासतामतिथिः। विपूतं च
 कमांलिख्य वाकिं नष्टं संपुतं। कथाश्च सा हं वायुश्च संख्या कसं स्यात्। स्यात्तानि समं तदिदं स्यात्। तिमि सर्वथा। विधिवद्वचनं मत्स्य
 दिदं कथां तं पदं। नाडी संख्याधनं तावत्कुर्याद्ययं विष्णुधत्तः। प्रत्येकं कमां स्यात्। गीतं च यित्वा पूतं पूतः। पिधायिका दानस्या समाकृष्य भव

१७

यदुने ॥ अधिका विगतं ॥ पश्चिदं स हस्त्यां न्य कविंशतिः। अहं मातुः स्यात्। नां स्यात् संख्या नष्ट कमात्। माहं स हस्त्यां कं वायुः। नाथ सं हस्त्यां
 रुत रुक्माया स नृकी। ज सर्व कार्या वता स हस्त्यां। अथ एतय विचनं वायुनि स्यात्। हस्त्यां वज्रं कं। वायुश्च काले हस्त्यां वामं शर्म हानि कं। माहं स हस्त्यां
 धात्वा दिला हा फ सं ग कामकं। वायुः शर्म वस्त्यां पश्च सर्व सिद्धि कमात्। नष्ट याग वनं। वज्रं स हस्त्यां वायुः। वायुश्च वज्रं गवां वा माही रुक्मिणिध
 ॥ वायुपुत्र स हस्त्यां वनं दक्षिणं कमात्। स्यात्। दया महिन्त्र यागान च वज्रं रुयत पूतः। अहं रुक्माया स हस्त्यां वज्रं कं। वायुश्च वज्रं गवां वा माही रुक्मिणिध
 मां गत्ये च गवां दया पश्च स हस्त्यां कं पश्च कमात्। स्यात्। दया महिन्त्र यागान च वज्रं रुयत पूतः। अहं रुक्माया स हस्त्यां वज्रं कं। वायुश्च वज्रं गवां वा माही रुक्मिणिध
 कपूत वजी सं दहज नका हं वस्त्यां। गुहं स हस्त्यां कं पश्च कमात्। स्यात्। दया महिन्त्र यागान च वज्रं रुयत पूतः। अहं रुक्माया स हस्त्यां वज्रं कं। वायुश्च वज्रं गवां वा माही रुक्मिणिध
 स्यात्। दया महिन्त्र यागान च वज्रं रुयत पूतः। अहं रुक्माया स हस्त्यां वज्रं कं। वायुश्च वज्रं गवां वा माही रुक्मिणिध

सनाः पुविगंधर्मकायस्संनिष्टं सहागविशुद्धं। निर्योनिर्मोक्षकायस्य नृत्तिकायकृत्यामकं॥ धर्मकायगुरुं सर्वं स एष धर्मविगुहं॥ निर्मोक्षवि
 गृहं एषा पृथक् सनापि वा॥ यावत्तमं स्तितायागीपंचवृद्धस्वहावकश्च॥ गामदक्षिणयादृष्टाः धाविचनं विषयः कुम॥ दक्षिणनिर्गतावस्तित्रा
 एतन्ममबुलं वरु॥ ऊवाकूस्समसंकाशं श्रुमिनाहं कुरुदेवतां॥ गामाविनिर्गतावस्तिवायुर्मलसं सदा॥ हविस्वर्गं सहस्रं श्रुमाघं पवमदवतां॥ वा
 योविनिर्गतावस्तिरकां वनेपुहपात्रिगं॥ मोहसुमबुलं वरुवायुनत्वसं वं सदा॥ तदामेदुपचावस्तु शिरुकुन्दं सुनिहृ॥ वावृक्षामबुलं
 वरुवजवावाहिमेहाश्रुतिमा सर्वं देवा नृगा वायुश्च सर्वं धृष्टपदगोकथ॥ वैशाचनस्वहावाभो महावायुपकीर्तिरु॥ मावृत्तंगक्षयधोगीपुविग
 तीसमाहित॥ लकादिसंख्ययायावदगंधायं जपे सदा॥ लज्जामागदजायनपनिपूरु नसाधकेश॥ नष्टायुवपिपंचाद्यानजीवनाप्रसंगयश्च
 भषातदृष्टायपवनसहस्रं गंधायमूदा॥ श्रुतामायुतयोगनकिष्ठविष्यं समाहितथायवाकूस्सुक्तागानसुखं यकि सर्वदा॥ श्रुयूर्यवायुनास

१४

ना सर्वमायादकलमात्मविन॥ कूम्भकंचकूलं कृत्याड्याकस्तीविधामकर॥ यद्विंशन्मार्गकायावमाध्यासादिगुणस्तथा॥ अष्टरुद्रिगुणस्तथा
 ४ कूम्भकस्तनकायके॥ विषयकूम्भकं पूर्वं श्रुत्वा नाजोममबुलं॥ विषयामध्यहस्तनप्रदयाधुष्टिकाकुरुत॥ यद्विंशन्मार्गकायावमाध्यासादिगुणस्तथा
 कूम्भकिया॥ विगुणजुष्टुद्यातां॥ अष्टरुवमनमादिका॥ सजवजययन्ननभश्चनंपदमिदुमा॥ शिरुकूम्भकयागस्यमस्तु ईनेपुवदेव॥
 सत्वाकूम्भकं सुवीरुएनिवाधनावकिष्ठं॥ कस्यकल्पसहजाधिमस्तु नायाकि संनिधिं॥ हृदयाजुगकं वायुगी॥ तदंकावसन्निहं॥ ध्यायां समा
 हितायासोवाधनविषयादिहि॥ संसारुद्धं एतवायुर्निर्वाहो म्यादाभागत॥ श्रुपकिष्ठनिनिर्वाहं हृदयां तावृहस्तिगंधाडुधो॥ ध्यागकं वायुसंपू
 टीकं एमानेसंगतया स्यागानसनिहं पदमाप्रयात॥ वायुयोगं नजानातिथा सत्वापि वागतिनं॥ ससंसारं स्पकिं कस्यात्ताना इह खन्यपदं
 ४॥ गतागतं च वायुं लेजयस्तु सुबुद्धिमान्॥ वायुनाधिष्ठितं सर्वं वायुश्च सर्वगतं हवेत्॥ नृत्तयाहृत्तगवान्सास्मा महा समयनायकी॥ वाद

[illegible][illegible]

चक्रगुह्यं पृथ्वीकचक्रं अग्निं चैवं वायुचक्रं माहृत्य वायुचक्रं मनुजस्य दुस्चानं लज्जयच्च विचक्रं ॥ १ ॥ भक्तिपद्धि वसा कृष्टि माग धम चा
 दनं तथा ॥ २ ॥ कस्य यागं न जानाति यथा कस्य परिग्रहं मरु ॥ ३ ॥ अग्निं येन रुच्यं स्युर्वीयं न धनं कपय ॥ ४ ॥ मरुद्वारं वदं वा नूतनं धनार्थं दश ॥ ५ ॥ दाजि ॥ ६ ॥
 प्रसंगात्तु ईरु कनकुलं च वरु ॥ ७ ॥ वरुवेर्गुमिदं व्यकंपयेनाथ स्य संवर्ग ॥ ८ ॥ गोमां च प्रसंगात्तु वायु मनुल न सं स्ति ॥ ९ ॥ हवि रस्य मसं जागं कर्म
 नाथ स्य संवर्ग ॥ १० ॥ दं हस्य प्रसंगात्तु कनक वरु सनि ॥ ११ ॥ माहृत्य मनुलं चैव वरु नाथ स्य संवर्ग ॥ १२ ॥ सुधा मनु प्रसंगात्तु कनक वरु मनुलं ॥ १३ ॥
 शुद्ध सुष्टि कर्म कोशं वरु नाथ स्य संवर्ग ॥ १४ ॥ सर्वं धरुं स मरु स्य माध्या नाध हि धा विहि ॥ १५ ॥ वैवाचन स्य मेहा वाया स्य क काया विनिश्चय ॥ १६ ॥ वायु कवं न
 जानाति कर्म कर्म न सिद्धय ॥ १७ ॥ तर्हि को स्य जाय क वायु रसर्वं गता रुच ॥ १८ ॥ वायु कला न पूर्वं मरु कं कलं कु साधय ॥ १९ ॥ पाश रुतश्च स्योतां वाग्वा ॥ २० ॥
 ४ सर्वं कर्म कर्तुं विदुः न वाहनं चैव वृद्धं च युद मा प्रया ॥ २१ ॥ न हस्यं सर्वं कर्म स्य उपायं वा धिका वरु ॥ २२ ॥ पुन नूतनं च रगा न मरु कं पय वस्ति ॥ २३ ॥ पम

२४

वद लमके क मरु ने मरु नृ क ॥ २४ ॥ दा मरु म हाय कुर कथि नं म म वरु ॥ २५ ॥ सर्वं च कर्म कं यकुं दाद ॥ २६ ॥ सह का वय ॥ २७ ॥ १ को वां दु महा चक्रं कृष्णं द
 थ कर्म ॥ २८ ॥ ल एन दाद कं देवी साध य साध ना म कं ॥ २९ ॥ पह ना सव ग अरु ना ॥ ३० ॥ य ह ना ॥ ३१ ॥ स ह रु उ म्ना ई रु द्वा ही ॥ ३२ ॥ सा वा रु स म्ना उ ॥ ३३ ॥ म म रु
 ना हि म्ना उ म्ना वि हि ना स ध ना ॥ ३४ ॥ स ह क म्ना उ ॥ ३५ ॥ म्ना क र संप व म्ना मि ना डी च कं यथा कु सं ॥ ३६ ॥ स फ कि स ह म्ना शि ना डि द हा नू ना रु व रु ॥ ३७ ॥ ना डि
 का उ प ना डी नां र्ग वां स्ता न स मा णि ना र्ग वां विं र्ग रु न ग तं ना म ना डी पा धा न म्ना य ॥ ३८ ॥ ना डी स्ता नं च पी ० चै च रु विं र्ग न्मु मा र्ग क र्ग र्ग मां स धा
 पा ना डी म्ना श्रु य कि च सर्वं ग ॥ ३९ ॥ पू णी म ल य न व द क व हा स्ति ना र्ग जा व ध व नी स्ता स्ता न क र्ग वा म स हा व हा ॥ ४० ॥ आ दि या म्ना द कि ॥ ४१ ॥ क र्ग रु ना
 डी ल म ल वा हि नी ॥ ४२ ॥ म्ना व द पु ष्ट व स कि ना डी व क वा हि नी ॥ ४३ ॥ ग मा दा व ली वा म क र्ग ना डी वा यु थ वा हि नी ॥ ४४ ॥ वा म ध वा रु मा ध म्ना स्ति व ह कि सर्व
 दा र्ग दे वि का र्ग स्ति ना व रु ना डी व क्थ वा हि नी ॥ ४५ ॥ मा ल व स्ति द य स्ता न ना डी द्वा द य वा हि नी ॥ ४६ ॥ का म व रु क र्ग या स्ता न च रु व ह कि सर्व दा र्ग ॥ ४७ ॥

कृतयुगलनाडीपिरुवहासदा॥ नाहिकिगकूनिस्त्राननाडीरुहसावहाजा॥ लनासिका॥ यकुमंजुमालावहासिका॥ मुखस्त्रानकलिंगपुगुहावहिसका
 सिका॥ लनाकाकचदहाकुनाडीउदनवहासदा॥ नाधिहृदयस्त्रानपुनाडीविम्वयवाहिनी॥ नाहमालयमंडस्त्राननाडीसीमकमध्या॥ पनादि
 वाहिनीलिंगनाडी॥ श्रुषवाहिनी॥ गहृदयनागुठस्त्रानेसामानेपुयवाहिनी॥ मोवाडकुवयगने॥ अनिकंजसदावहा॥ मुखकुंजधस्त्राननाडी
 ॥ ७ ॥ गणसदवाहिनी॥ नेगवपादाकुलीरुवानाडीमदसदावहा॥ सिंधाबादपदस्त्रानमृधुर्वहेतिरूपिणी॥ मवमृगुष्टयास्त्रानेखटंवहतिस्व
 दा॥ कूलजातववास्त्रियावाल्सिंहानवाहिनी॥ कषांमध्वसिकानाडीललनामृजवाहिनी॥ दकि॥ वसनात्यातानाडीचनकवाहिनी॥ संत
 नामध्वरागचरुल्लवावृहमध्या॥ कदलीपुष्पसंका॥ लल्यमानाल॥ मूखी॥ नलीवडिनिवादीकावाधिसिहसमावहा॥ साधुवहीनिवि
 ह्यासहजानन्ददायिका॥ पाथान्यस्त्रा॥ सर्ववीजानांललनायासुनाडिका॥ मृकजवाधयमन्यागंगा॥ सिंधूपवापगा॥ कानुवधानिनायसु

वकीरुताश्चवगमनं॥संहागकायवृषास्तजानीयादहमाशिता॥स्मिमुद्रियांप्रथमायाललनायाश्चनाडिका॥ललनापुष्पस्वरावनवसनाया
यनसंस्तिता॥श्रवधूमिमध्वरा॥दुग्धकायाहकवर्जिता॥ललनासंहागकायाया॥वसनाभेर्माशकीकनू॥श्रवधूमिधर्मकायस्यादिकिका
यसंमर्गं॥नानाडिकोसर्वोभाभीमशुरुचानिधी॥तस्यासमूहसंजोतापिभुक्तदवतात्मकं॥वृषाभीकंरुचिभुंपिभुमीकंचदवता॥तस्मादधि
स्थयागनकथनामयसर्वगायनयनप्रकाशेपिभुमीकपदस्तिता॥तनकसंयतांप्रप्ययागीवृद्धयमाप्रयात॥अथप्रावाचरुगवाकर्मिका
वादेशेयुत॥वकाऊनथरुर्वेगपूत्रीनादिरुविशित॥शीहृन्कवजवाभाहीनहृत्तनरुविषयकि॥अथमकुस्यसामर्थ्यंवाकंकाटिसहस्रकर
॥गुरुमनेकवीनपूत॥सावसमचयत॥अन्यतज्जाक्रमकथ॥इदमकुस्यसाधनं॥अजाफासंकुवकुंचग्रावृषाध्यात्मनाकथा॥स्यवभादवहृत्तनस
र्वसिद्धिरुतास्तिकं॥प्रवशकानेसासुरुमानयसर्वमाऊनं॥निकासकालेमाहृयाकृष्टि॥किंरुसर्वयागजं॥स्तिकितालरुयागोरुनदिगैवृद्ध

गंघाकस्य कुलस्य ॥ सर्वनाताविधं कुर्याद्यथा हि सयज्ञकृपां ॥ उपायिका श्रुत्वायं सर्ववर्गिणं महिम्नं दनि ॥ बलिं च दापय कुरु पूजय च मा
 दिवं ॥ मनुजापथ कूर्वा मश्रुज वज्राल मजने ॥ नमुलि हाव्य धागं कलि नादि मर्द्ध मजने ॥ वरु स हं मखा नडी कथा गता ह तडी कर्ज ॥
 ठाकि न्यादि स मस्तु दहे हि स न वग्नि का ॥ वि स तं ली ल तां या न्नि दग्ध श्रु क हं ॥ गीं ॥ इत्या इरु गवां यो गी वज्र वा ना ही नाय की ना सर्वथा
 गि स मा धा गा द्र ज स त्व प र्म स र्वं ॥ २६ ॥ ~~अग्नि शी य ज वा गि क ल्प म हा क ल्प वा जी व ज वा वा ही उ त्प दि य क च क म लु ल ना म य ह्म म र प ट~~
 ल ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ अथ क र स प व ह्म मि यो गि नी नां य थ द यं ॥ यो गि नी यो ग मा छि स र्ग वा न्क र्जो उ नं प रं वा वा स
 न नं रू प थ स्त्रा वि ना जाल स त्व नं ॥ का य हा व थ र्द थ यो गि न्या न क रू प कं ॥ का यिका स र्व मा छि स र्ग वि धं जा य क रू या ॥ इ या न द छि ना शी च न
 र्थं स ह्म ज य न ॥ न ल या स्म यो र्व लु वा द द श म ध्य क र्थ ॥ प र्व जी द स मा छि ना द यो र्म न र्मि हं वृ द्ध का य म हा न स ॥ म गु त्थ क स र्ग वा न्क र्ज वा ना

२१

हा पद मा थ या न ॥ म हा ज म्बु दी रू म्पां व लु वा द द श म ध्य क र्थ ॥ प र्व जी द स मा छि ना द यो र्मि हं वृ द्ध का य म हा न स ॥ म गु त्थ क स र्ग वा न्क र्ज वा ना
 वा र्क र्थ ॥ वा क्थो ध्वा त्म क द वी वा गि न्पि धी ॥ दि रू जा न क व र्क र्ज उ छि न जाल क व क्ति का ॥ इ द्वा र्द क ला ली च पं च म्पु र्दि धा न शी ॥ स वा न्क र्ज म क
 क र्म प र्था शी र प द वि ता ॥ क पा ल मा लि नी धा वा द कि ॥ क र्दि धा वि ता ॥ वा म क पा ल र्वा ज स र्व त्म हा र वि ग र्ज ॥ म ध्य म गु ल स्त्रा प्प उ स फ र्ज
 ॥ प र्वा व र्क ॥ द डीं गा क र्ब ह द यं वा गि स र्व स प र् ॥ उं थो अं व ज र्ज उ ह कि नू नी नू प र्द वी रू शी ना ह्म स स्त्रा र्हा व र्द हं रू द स्त्रा र्हा ॥ म गु ल या
 थ द वी नां अ क र व र्क कं म र्ग वा ना क्पा य न म थ नी कू ल ना डी व श म्प र् ॥ वा ना ही स्त्रा ने मा मा य यो गि नी रू ज कि क्ति ॥ स्त्रा हा गा य म र्वा दि स्त्रा ग फ डि
 ग ति द व ता ॥ का यं स र्व वि धा स्त्रा य रू या सि द्धा न यो ग व र् ॥ स फ र्जिं गि क र्ज थ उ त्प य न म हा स र्वा न्क ॥ अ धि का नं जा कि शी य स्त्रा रू रू ज कि नी कू लं
 ॥ प र्द म्प र्द यो स्त्रा मि क थ म्प य र्ज म म ॥ का य यि ल्प रू ग वं वा ना ही स र्व दा य वा ॥ ग र्ज म्पि ल्प यो र्प र्द न त्थ स न मि ल्प यं ॥ व का नं गु क र्वा स्त्रा का

[illegible]

दशो बह्म बाहुं स्यात् अग्नौ दग्धं हि क्रमात् ॥ लघुनं व स्यात् वरुं कृत्वा जाल इतीम सं च न कृत्वा च को व धृति विरूपा भक्तार्थं न दु कान कं गति हि श पंचा म
हृष्ट सं स्य क श्रुत्वा नार्थं कुरु ज नं ॥ न च वरुं प्रे मा ख्या मा श्रुत्वा नाश्रु कान्ता श्रुत्वा नार्थं ॥ गुहा पूरु यत्न दशो दक्षि गुहा सह ता दं द सह द ॥ न च इ ती स मा ख्या ता म दं
दा कि नी मि दं ॥ ख च नी रू च नी श्रुत्वा नाश्रुत्वा च वा सि नी ॥ वि वि धा दि प्र वा ति त्या जं म क सह जाल स्यं ॥ यो य य स्या धि वा सं च स्या न स्य दं ध न स्तु तं व रं
न व स मा श्रि स्य वि ह न नं का म या गे जं ॥ च नं च न प्र व रं म हा प रं स न वृ षि नं ॥ श्रु कं रू ज य रू च श्रु कं रू ज य रू च ॥ ल जाल ज प ही न च न स ही ना प री
न कं ॥ श्रु न ग ह नि ग ह व ज्ञा व या य स्य स्व स्व ता व क र ॥ वे द ध र्म प रू मि थ क र्व न् स रि यु ग यु ता ॥ श्रु व ध नी प र म वा यू च स्ति ना वा वा क्ता दि या गि ती ॥ श्र
स्ति वा प्रा षे वा यू भं न हि द्वि जा य न स्तु तं ॥ वे द च न न मू ड यं द वी श्रु क्ता स्य व ज्ञे क स्व यं ॥ व द्धि नं मं रु ध नी नां व रू न स्व स्व जाल न र्वा सं स्तु तं च य था धि प
ति च रु क चिं द्र य था क र्म ॥ श्रु थ वा श्रु ति धा न म् च श्रु ति स म य ल क्ता नं ॥ श्रु ता गो प न्ना स्व यं द वी वा ल क र्ता ल या ग र्ता ॥ न रू द क र्ता त्रि वि ल न प रू प त्म

[illegible]

दासिदासं तथेव च ॥ न प्रवक्ष्ये तथा समय साधकसिद्धि सिद्धि निवृत्ति ॥ न तेषां यदि प्रवक्ष्ये सिद्धि नूनं प्रवक्ष्ये ॥ समयदा हा हव इह खं कायिकं मान
 सं तथा ॥ स्नानं जहाति या इ नं ना इह खं य पदं तदा वक्ष्ये तीयां तथा ह्यत्वा संग्रहं पूर्वोक्तं च ॥ अथ कृतं कृतं दत्तं पूजय यदि धिना सह ॥ पूजय
 पंचगंधं च दत्तं विना प्रकृतं ॥ आचार्यं बलि मा कर्षं धृजं कृतं ॥ अहिकं ॥ पूजय देवता बाध्यं दानं प्रथमतः सप्तितं ॥ १॥ अति पूष्टि यथा कर्म
 यदसिद्धि च हृदु तथा ॥ यथा यथा हि कर्म स्य तथा कर्म मनुष्यं तथा ॥ माधी ॥ अती तथा पोष्टी यथा पाफं रुदो कितं ॥ शुचि रं ॥ कर्म ति देव
 स्तुष्टु माहा विवर्जितं ॥ सर्वं साधनं गंधं छिद्रं कर्म वृत्ती पुकल्ये यत्नो ॥ खान पातं तथा पयं ता मूलं दक्षिणा तथा ॥ ३॥ अथ दानं पत्न्या मनुजं
 च पूजय सर्वं ॥ पत्न्या दत्तुं सं चानं कर्म वं जी विवर्जितं ॥ ४॥ अथ सं समयं सं चाना दक्षिणां सं ह्यं सं यतं ॥ तं तं सं समयं विपुला माचार्यं नापि धि मय
 ह्यं पी ॥ अपि ॥ ऊं ह्यं मल्यं गंधं न वाशिनी ॥ वी नवी नवी नवी सर्वं तं किं तं पुष्टो मास्यं हं ॥ देवो पुमानं समयं मयं मागं रुद्रं वा नथ पमं

[illegible]

छमार्गकं ॥ संवत्सरेषु मासेषु च कस्यचन चर्यते ॥ ननु मय कस्यचन मणि हिल स्वतागत ॥ संवत्सरेषु विचरन् ननु संवत्सरेषु मणं ॥ अपदम नहि ठाकि
 सफ मासति सस्वत् ॥ काकाग्यादिषु नष्टेषु नायका इत्यल्लज्जमहे ॥ एवं सर्वे सनाथागं जका संवत्सरेषु य ॥ चक्षुली कालतविसंप्रति नास्ववधुकिं
 ॥ इत्यनका केन तात्यहि विष्णु का ननु विचरन्ता ॥ वाधिविरुक्त मध्या इत्यदमं ननु कस्य पकं ॥ वज्रवा नास्तथाख्याता आसमगमनां न ॥ अकस्मात्
 कृतं गत्वा महा माया ऊन पकं ॥ यागश्च विरुचि रूचयं गीयाग लज्जं ॥ चक्षुस्त्विति कं नृपं विन्दु सर्वं याजितं ॥ लज्जं कर्म संध्यं चोपासीत
 वृक्षवृक्षं मीलनं वा वाक्कास्त्रिकं सनं वरु स्वतावक ॥ समयसत्त्व विद्यं उपास्मि नमो भगवते ॥ ननु सर्वे ता ह्याहि देवता यस्मय जाकजां वा स
 वं मनोभूता मरुविधुं सा गतिमो गीया ॥ नाग माया सदा गीयां पद्मं अकश्चयं पद्म ॥ नामा ऊन मय यागं मंडा सह कामिनां ॥ नम्यमानं सदा स
 दीप नमः षडककं ॥ एवं सफ विष्णु आधु सफ विष्णु न लज्जं ॥ नहि पर्वत धीयाश्च पविष्ट कस्तहा भुव ॥ पंचविंशति नत्वा स्मावृजानां च न

२३

लहृत्ता वाचक वाजदिश न तां पकृतिं पूर्यं तथा ॥ एतास्त्व वं सर्वे ना संवधर्मधुस्व लज्जं ॥ माऊ वृक्षं तथा सनं वज्रसत्त्व कुमार्गकं ॥ धर्मो
 दयं मेहा यानं गुक्कमलं नयं विदुः ॥ सुरुजं समाजं च वरु लं श्री वागहि कत्यकं ॥ महाक नृध पंच नेनात्यं सर्वतत्त्व ॥ नृप नृस्वरावकं ॥ तस्मा
 दास्व वनामं च महा समुद्र रूपकं ॥ आसम नाय वस्या हिं ॥ सत्तां वृक्ष गुहा इत्ययं ॥ न च तै न वि कां ऊन वृक्ष पत्रिगुमं गुहं ॥ वेर्क नास्व वं कल्याणं
 प्राप्ति माया स्व लज्जं ॥ महासकुं नया लं कं सर्वं जति विष्णु कं ॥ सनाधर्म मलीकाश्च मरुत्तं ताव वरु ता ॥ इत्यना सा स्व गभं च महा समुद्र लज्ज
 ॥ त्यामा स्व लज्जं ॥ रुमि यथा वदन पूर्व स ॥ आवस्ती मदन नात्या हि ॥ विहं या सर्व या गी नीं ॥ नामादि सर्वं चकस्य नाजी मार्ग नगामिनी ॥ अथ
 वात्ता कि माश सा माहा माया मरुपि क्षी ॥ नाहि कस्त एवा नृप संका किं च वि सं रया ॥ वज्रवा नाहि देवी ॥ संवत्सरे लामयस्त्रिं ॥ सोम वरु निहा
 देवी लोषं जाकि नी संतिहं ॥ ननु विदुष ताव वृ सर्वे स्या पविष्टि ता ॥ वज्रवा नाहि नृपं च तथा गत कुलान्ता ॥ एव वृक्ष कया नि न्या वी वाश्च सर्व

सिद्धकलातामापिहायापराभाहृत्साहृत्तावास्वामिप्रातिभेकेकाकुवरा। तामंडल्यताहृत्तं वज्रसमिधियं त्रयि। अवंतत्तममाशिरयप्राति
 तीरमदपोसहा। कीउक्तिविपलं वासं हवनिर्वाहापथ्यकं। मूथारु संकुपतावर्धवा महसुंडुसकं वायनी वस्यतयागीती। पुंसिद्धिपजाय
 क। उकाहु लींदर्शययसु द्वाष्टां सखागताहृत्तनाकु ममडांविजाती योदा मासु सुनिपीउयेत। अनामिका कुयोदयाहृत्तया कतिठकां।
 मध्यमा दर्शययसु द्वाष्टां सखागताहृत्तनाकु ममडांविजाती योदा मासु सुनिपीउयेत। अनामिका कुयोदयाहृत्तया कतिठकां।
 यकयसुधी माकस्यपदार्थयतं। मदनिदार्शययसु द्वाष्टां सखागताहृत्तनाकु ममडांविजाती योदा मासु सुनिपीउयेत। अनामिका कुयोदयाहृत्तया कतिठकां।
 उक्तननुकड। वामनयाति योनाश्रजाकिन्या वामनरुसदा। वामहसुपहासीच वामदहापहाकिनी। म्दीशां हसुपहासीच समयीस्यविहीनक
 । कीभं च पार्थिर्क कृष्ण कूलवीजपजायत। कूलक्रियांतं सज्जकिजयति स कूलविद्या संलिख्यतयदा। निवह कवधनं कृष्णोत्सविनीं वा

२८

मयाशिनां। स्वविद्यां समग्रं तस्य साधकविषय हिता। गालुविवकवापि नासिकायां कतां जल्लिं। त्रिय्यग्नि ३ सदा लाक ४ स्वविद्यांचतिरी
 कथं। सहा वंयाक्रियागिन्य ४ समयं खलु इच्छता। कपालपमशुखदा नधुजचक्रुचामलं। वांसे विगलं च सयुक्तं लिखत्सु गह
 वमं कृ। मयमान्प्रियाति संलज्जारुय नाभि नीचया। वावाही कूल संरुता ४ सहजामितिकथं। दहा दहा किजाय नयाति नीनां सव
 यत्सदा। पी। १० पपी ० कृतापकृत्तु द्वाहापदुदाह मलां पका मलापके। १० मभं नं चापमभं नं चजन्वदीपव्यवस्तिता। पी ० जागंधरी
 रुध्र उडिया नं रुध्र पी ० पी ० मवदं मवचं। गादावय्ये पी ० सुधा वामं च वाक्यं। दवीका दाहिधा नं च मातवं च पी ० कं। वासवपी क
 यं कुकुमाशुकि धनकं। विगकं न्या पकुं स्यात्तां गले चोपकुं कं। कालि जलप्य कथा कुदा हसु मथे वचं। कांचिकां स्यापकुं दाह हिमाल
 यवि। १० रुद्र गेप ताधिवा सनाम लाया गुहदवतमवचं। सोवाकु सुवकुं दीपचेउपमला पकदयं वा मभं नं पाटली पूजं मभं नं सिंधु मवच

यमहाहागाजंरुनांषादगेपुनरुलजागुचक्रामरुहदावंधचर्ममास॥ अस्तिं वद्यामपूयाश्रुतस्यंरुचविमरुविहृ (अपिकागनहस्यादिपदेयोडता
हिमदधानीममरुजयमहादेवीचक्रादिंशालिकागहामाकमयमर्वरुहर्वरुसन्धिमरुहजगि। रुहकलालोविहृदीनेडितीताविनामिकागवामणीः
घालनूपाश्रुमादेवीसेवत्यतीगरुहकालीमहाकालीरुनकात्रीपराजिता। जयाचविजयाश्रुजिताजयनीशानइतीचग। रुडीचगीचरुपापीशमयसि
नीबोडोकोग। काचडीजीवीचगुलोमरुहरी। ब्रह्मगीसुडीकाग। बाजपूगीमहादीपिदिव्यामदपूनिकाग। रुहवंनाडीचक्रुकींमाहनीषतमिनीगक ३०
ययकुममत्यामीदिंमयाश्रुतामिनीग। धरुसर्वशमीनमुजंमाहनीमेरुहावया। रुहालोचरुजानीयाइंगहिनारुह। कडुगखगुखगुंमरुधरु
वधवादेया। नडुगकालंशुचितारुनश्रुगुरुषूलकमरुह॥ अश्राप्यरुयचविहृनैयादेरुमयस्यधरुष॥ अलंयंरुविषानीयाकर्मकींमाहनीह्य
गहाय्यमातंमहापापंमानरुमसर्वधरुकंरुमैश्रसत्याधिताडीवकींमाहनीसर्वकर्मिकं॥ नावकीचययोगिन्यास्वसंकोताधितीपवांमीनचादयकाल

[illegible]



ललितोयथापञ्चकमालिख्यप्रफुल्लमनुयाजित्वावाक्कावजावलिबद्धामाध्यनामविदर्भिताग्नजुचिकर्षेदेवाग्र्यवासनागदयगसंपुष्टलि
खातापितकर्मशुक्लसुदधवद्यतुवापूर्वोहिमस्वसितवर्गुसितपूयभश्चयतुवापूर्वतश्चतुमभुलापविष्टंसाध्यंदृष्टासितकलभेयुतामतादकविपरित
नहिषिंचयतुवाऊपरुसकाऊवमकुंजिसन्ध्यमवि संकिंकागभक्तिस्वस्त्यनचक्रमेवदीर्घायर्हवक्तितुजंयहनगवविधदंसावामहस्तपूसावयतुवाचन्दनेधलि
खच्चकंपूर्वाधपंपूजयंतुवाचस्पदकतथाग्नितंमाध्यजायतुरुतुवाहवामपुनपिदुजकोरुहककुवितापकस्यापूर्वोहिमस्वसाध्यंययाऊमचेविचक्रगंग
षमकुवतशुष्टभक्तिकादिवनकेमशाकूकेहसगन्धिसमिश्रुंयौष्टिचक्रंमालिखतुवामनवदयलिखत्वाहागानक्षत्रविदर्भयतुवापीरुमकुतश्चछयघरुम
धमाध्यपक्रियउरुगारिमस्वति संधालुपीरुवर्गुवितावयतुवापीरुमकुलचतुस्रंसाध्यंदृष्टाविचक्रगंगपीरुवर्गुमनेहसिंचसीरुपूयभश्चयतुवाउच
नपौष्टिचिह्नननिर्विकल्पनचरुसागाम्भकस्यपूष्टिकुन्साहोवायमकुगोविदर्भयतुवाधनधन्यंममदिचलधौचसमागमंननुंसमोपयागनयोष्टिरु

यतिनाम्यथा गानकचन्दननावकनामिकावकमिश्रयत्वा कर्पेटहजपवाद्ययचक्रं समालिखत्वा आमसनायसंवि-
यहकाववाविदहयत्वावकसूत्रं
यच्छित्वावकपृथ्वयचस्रग्यरुमधूमध्यस्थायकृत्वाआचार्यसंस्तिरुगपश्चिमाहिमूत्रंरकदेकुवर्तुविहाययद्वावकमभुलमध्यसंमोध्यंरकंवि
चिक्तयत्वाऊप्रत्मजंमविद्धिचंद्रफाऊर्वमगादिकंगविहलीरुवपाठयापतिहंसिद्धचविचिक्तयत्वायदावसंमाद्युदियुतमधुवहितंमवमकुंरदि
गङ्गाभवेकोपयत्वाइतंगरुहगारुवहियस्यकस्यचिन्नान्यथागम्भानचलकंरजस्रत्वांकर्पेटवागजावेससमन्वितं।द्वयचक्रं समालिखत्वाऊह्रींकावविद
हयत्वा ४ ॥सगावकुंकापालंवाविलिखत्वांरकंसिद्धिगि।वकसूत्रंवाविलिखत्वावकपृथ्वयावचयत्वासाध्यसाद्वयमङ्कगिविधागलकपाशान
वध्ययत्वायस्यविचिन्नासाध्यंनागदुहिकदचनवावदिगानलकाद्यागितिकापथयन्तनिगहं।कनकरुभाजगभाजमकाकर्षभाह्रींऊहकावसाध्यमा
कृष्टिपोदाकर्षभासूत्रमथवाग्यान्यतमहंवश्रुमनेविधिमुद्रमंभमूद्रादुल्लखासमायोसूत्रपंचाशकाष्टकेन।साध्यक्यादभाकाष्टकुंरं

[illegible]

दर्शकावकावमस्ववन्धनं साध्यमवद्वदयपवगयित्वा विचिन्तयत्वा साहचर्यमगुलं साध्य कनयुवसंपूटी कृतं उपलब्धं मविद्विन्नं नृकि र्वतिः
 तिष्ठितं अथा नृकवमं वधुं सावयं विधिनिश्चयागं गजिकालवगं वद्वद्वेति निश्चयं विरवं कथागं धृष्टं विनांगं वधुं नृकि कानकनवागं नृकवधुं
 मसिं कृत्वा दिक्किं हि मुखयागं कथागं कपकस्य लखसा चर्कं दयं समातिरवत्वा साध्य नासं कतागं कृत्वा वधुं विद्वद्वेति कथागं कथागं धान ता उतपः
 ह्यालीरुपदनवागं सूर्यमं नृमध्यं कल्याणी च विहावयत्वा नीलविकटकलावा संपूटी कनयुवसंपूटी कृतं विचिन्तयत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं
 नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं
 दवास्ति तादहास्यदहकुपवगयत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं
 यनृशपित्रिचिन्तयत्वा मकुं जापयत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं

३३

लूकगंधाशयं ताववाकसजा किनीमरुवां कुर्धमाननचरुक्रयकिच ॥ मकुं जापयत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं
 यवाविधं अथा हिमानवां कर्माववां नचमोववां विकला माकुं सावयत्वा तावधमानसं मथेवेचक्रदयं लिखत्वा कानधविद्वेति कथागं कथागं धान ता उतपः
 नासा समादायं लिखत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं
 नृनवाजीरुस्य विहावयत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं
 ॥ १ ॥ काधकोधरुवपकोयुक्ती कला महात्मनाद्या नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं
 मकुं समादायं लिखत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं
 संपूटी कनयुवसंपूटी कृतं विचिन्तयत्वा नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं नृमध्यं कल्याणी तांगं

35

नीलचय्यजानकिदेवजसनिवाहिसहावन्दसकुजनसाहिस्रवालहआवि॥जिह्वान्निकुसकुसुमजानिसानवृक्षधम॥इदंगमहयासर्वोदचित्त
हामर्दितावनी॥यागिनीपतिअपिआचार्यधम्मैराचलं॥वीनेसंवादकं कलासंचाकेपालादितायकै॥सुखमुत्तमुत्तिहाअनिइसेरुधाकुडसहा
इतिमायनि॥कुस्मिइसहस्रहउताइविमहसहउतावनि॥ ७ ॥पुनरपिचरुगवांशनीप्रविष्टासर्वान्यूनयेस्फुनवायोगनस्फुत्रिकावायकी
सखात॥येनाचनादिनकुचस्फुनयकुपुनर्मखात॥रुगवांसर्वसस्फुजंकलायागिनिहकुक॥उदानमदानयासर्वचयोगककुकायेनाचनमत्तसं
चमासोडापापसिद्धिकं॥श्रुकास्यनाचनकुंमामकिपाशुनवासिनी॥तामाकुपवजाचणदागन्धवसस्फुअगस्यर्गचधम्मधत्वात्वांकिनिगर्तस्वगर्त
कहावजपाहितावोन्धवंसर्वगीवरेहडकं॥मज्झिमीजयपंचयमस्यवेनीपुहककं॥पद्मानकविद्याकोचअचलोनीलदगुकां॥एकिमहावनासंरुउ
प्रीयचक्रवर्तिनी॥रुकुटीपरुगावनीचवजसत्तमु॥पर्व॥इसवंकनामथेउपायहावलकुगं॥पुहकत्तस्ययंरुंस्वहावसदास्ति॥वाधिपोकि

[illegible]

हृदयं गङ्गा २३ २३ हृदयं गङ्गा पय २३ २३ हृदयं गङ्गा नय हारु गवन विद्या राज २३ हृदयं चतुर्धा धय घागी दभं सनतु हा मय न गङ्गा निपो
 शिव भक्तं च सत्यार्थं सिद्धिं भव च गङ्गा महा दधि न गङ्गा मयु लं वपु वरुय न गङ्गा पञ्चदशो मन्त्र नेकु विराघ न गङ्गा यथा क विधि संपूर्ण दभं सनतु हा
 मय न गङ्गा उं श्री चक्र हं नृक हं हं हृदय हा गङ्गा लोकि कं सर्व सिद्धिं च त्व च नी सर्व भव च गङ्गा मय न मयु लं कृत्वा पूर्वा साकं पथा कुमा न गङ्गा यथ मय न गङ्गा पं म
 कुं जपे रुप न मयु न गङ्गा दभं सनतु हा मय कर्म साध यत्न विनिश्चितं ग विद धा चारु न कर्म मान न च विरोध दभं सिद्धा न जा प मोक्ष हा वज सत्य गङ्गा
 य ग चतु र्ध्व मयु लं वरुयिता साध यत्न कृत्वा नृपां गङ्गा पञ्च पाणि नी मयु मयु न तड सिद्धा न गङ्गा उं कि नी य हं हं हृदय दभं सनतु हा मय सिद्धि रूत
 वता द साध नी ग विहा न मयु पस्त्रा न वरुयत्न मयु लं वन गङ्गा पञ्चा मया मयु लं जप कलु निश्चितं ग द सा सनतु हा मय दी सिद्धा न नाज संशय ३॥ उं
 ला म हं हं हृदय हा गङ्गा श्री जान पाद पंच व सी क न मय च गङ्गा न म न न म विजय मयु लं वरु यत्न दभं सनतु हा विद्य न मयु साध य दिधि पूर्व कं

[illegible]

ऊरुमिनिउपदीपनिवासीचक्षुसंक्रान्तिदिहिंकाश्वेभषमासविहूयाहमीयंचमीसंमता॥ दाननिवासिनीदवीकासंरुधर्मधुकि
गदिमीयधर्मकायंचसंरागमूठसंरुवे॥ स्यालुनिर्मोक्षकायहिनाहिकाले॥ मेनसासुथनधु॥ चक्षुनिविहूयाकाकवमयाधवकिवाग
हिचावंसुदहिकुपाधिभांसाधयलेनात॥ नागनांसाकर्षांचवर्षापगलुसुसुनं॥ धर्मधुमहावाधि॥ स्वरावास्वयागिनी॥ धर्मसंराग
निर्वांशंगामिनीसुखवांदुया॥ मरुसंरावकर्मोत्साकाकिनायकतांपुकिशावजवाहीकल्यलुगतासातलुकाकिवां॥ उरुताश्चरुदंमकुं
फलींमहिवागिनी॥ अंवनऊनाकारुकागम्यावयनेकवीइंनइंसाकयटइंरुदरुत्वाटहोहउंरुत्वाइंहाइं॥ नंदिदीयहसुहदषपहंपायस
हावकं॥ रुसुपायसुहावदियंपहसिहसयनेहकुवर्गमहावाग॥ धर्मधुकिनीचसंनिरं॥ वाधिचिहंउवंयसाहदाकाकीरुकर्मभांरुवाकाक
रुमसांकाशवायनारुकिकाकया॥ उमरुकुंभयसाहसादइंरुदरुयसा॥ काकवदनाहगंदरुगताकाकीपूदीपक॥ रुजगतामहासा

५

पदं निदेशं हृमि सर्वशरीरापूजां कृत्वा दुवा नाही वज्रसूत्रस्य पदुया ॥ कथं प्राध्यादि वायुशंताम संस्पृश्य कृत्वा को न हलं मम शस्त्रा सर्व कालेषु
जायते ॥ रागावाताह ॥ प्रथमं नेत्रं पुथ प्राध्यानेन मूर्ध्नि गृह्णन् रावया ॥ न्यस्य द्वापमं वायुं ४ आवाधत्वा हिला कयुं ४ ॥ पुनः या तीयं कचस्मा रुद्राकाशे
नय पिच ॥ हस्ते दद्यात् न नाभश्च स्मृतितागमनागमे ॥ समो न जातिर्न कां गत्वा भूजा पूर्वं दुये स्मृति ४ ॥ उक्ता न वक्ष्ये न वाक् समं का पूर्ववत्समां ॥ व्या-
नां सर्वं जगं वापि मुदधं कर्म वायुना मार्गं ४ शुक्ला धरा वराह्यन होच पदं स्वयं ॥ कर्म मान्स्व हाव पे उ दाल स्य दुल्ल कहां वा कति वाग समानं च
जानाथि देवदहकं गोधनं जय महात्मा नापान वा यदि संख्यं ॥ राहर्ष ह्यति कं ह्ये न दना हस्य हृदि गत्वा न स्मोर्दे पथ कं ह्ये हि द्या न ४ सर्वोत्त-
मं यमरायथ द्वादश हृमी पृथमा से वद्वादशि ॥ देश हि ४ सा कुविहं या दश हृमि सर्वं यमरा ॥ ७ क हृमि स्त्रा वा हि ४ महा वज्रधवी मतां ॥ दानादि पात्र-
मिता या रु स ह्ज संवाधि म हया ॥ अ न गं न प सर्वं च वज्रधवी ॥ श्व नी प नां ॥ उक्ता न कं च यत्किंचि ह्म सर्वं वाधि वृ प कं ॥ पुनः देवा का न दवी च न रु का र ॥

[illegible]

कगभानिकर्तृनीत्यसंप्रदिकमध्यमसदागमनामावधमित्युक्तपर्यन्तनाहिनावकृत्वाश्रुष्ट्यादेवतानुपसर्वकार्मषयाजयकगश्रुहकु
गुलिकासर्वधर्मधरुस्वूपकृत्वासमाहितंजापतावनश्रुष्टुहंविशेषकृत्वाकृतपूजयदकृत्वाकृतायादिगुहंजापकृत्वाद्यापयजिगुहंशार्कके
लीजापंचदुर्गमगजपत्न्यमविदिन्नंचलावामकुनूपकृत्वापुष्टाहमसिदंजापमकुसुमादिसंगुहं। उपलभ्यदेवतानुपसर्वकार्मषयाजयकगश्रुहकु
गमनागमनिसंचिन्त्यसांकरुमकुनूपकृत्वाकृतयकादिविनिमृक्तंनथतापावमार्थिकंराजतथांमकुजापस्यलकृगविधिमुच्यते॥ १०॥ गुरुगवान
स्वामिवज्जककृत्वागमनामववीवसमायागवजसत्यरपवसत्ये॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥ १०१॥ ॥ १०२॥ ॥ १०३॥ ॥ १०४॥ ॥ १०५॥ ॥ १०६॥ ॥ १०७॥ ॥ १०८॥ ॥ १०९॥ ॥ ११०॥ ॥ १११॥ ॥ ११२॥ ॥ ११३॥ ॥ ११४॥ ॥ ११५॥ ॥ ११६॥ ॥ ११७॥ ॥ ११८॥ ॥ ११९॥ ॥ १२०॥ ॥ १२१॥ ॥ १२२॥ ॥ १२३॥ ॥ १२४॥ ॥ १२५॥ ॥ १२६॥ ॥ १२७॥ ॥ १२८॥ ॥ १२९॥ ॥ १३०॥ ॥ १३१॥ ॥ १३२॥ ॥ १३३॥ ॥ १३४॥ ॥ १३५॥ ॥ १३६॥ ॥ १३७॥ ॥ १३८॥ ॥ १३९॥ ॥ १४०॥ ॥ १४१॥ ॥ १४२॥ ॥ १४३॥ ॥ १४४॥ ॥ १४५॥ ॥ १४६॥ ॥ १४७॥ ॥ १४८॥ ॥ १४९॥ ॥ १५०॥ ॥ १५१॥ ॥ १५२॥ ॥ १५३॥ ॥ १५४॥ ॥ १५५॥ ॥ १५६॥ ॥ १५७॥ ॥ १५८॥ ॥ १५९॥ ॥ १६०॥ ॥ १६१॥ ॥ १६२॥ ॥ १६३॥ ॥ १६४॥ ॥ १६५॥ ॥ १६६॥ ॥ १६७॥ ॥ १६८॥ ॥ १६९॥ ॥ १७०॥ ॥ १७१॥ ॥ १७२॥ ॥ १७३॥ ॥ १७४॥ ॥ १७५॥ ॥ १७६॥ ॥ १७७॥ ॥ १७८॥ ॥ १७९॥ ॥ १८०॥ ॥ १८१॥ ॥ १८२॥ ॥ १८३॥ ॥ १८४॥ ॥ १८५॥ ॥ १८६॥ ॥ १८७॥ ॥ १८८॥ ॥ १८९॥ ॥ १९०॥ ॥ १९१॥ ॥ १९२॥ ॥ १९३॥ ॥ १९४॥ ॥ १९५॥ ॥ १९६॥ ॥ १९७॥ ॥ १९८॥ ॥ १९९॥ ॥ २००॥ ॥ २०१॥ ॥ २०२॥ ॥ २०३॥ ॥ २०४॥ ॥ २०५॥ ॥ २०६॥ ॥ २०७॥ ॥ २०८॥ ॥ २०९॥ ॥ २१०॥ ॥ २११॥ ॥ २१२॥ ॥ २१३॥ ॥ २१४॥ ॥ २१५॥ ॥ २१६॥ ॥ २१७॥ ॥ २१८॥ ॥ २१९॥ ॥ २२०॥ ॥ २२१॥ ॥ २२२॥ ॥ २२३॥ ॥ २२४॥ ॥ २२५॥ ॥ २२६॥ ॥ २२७॥ ॥ २२८॥ ॥ २२९॥ ॥ २३०॥ ॥ २३१॥ ॥ २३२॥ ॥ २३३॥ ॥ २३४॥ ॥ २३५॥ ॥ २३६॥ ॥ २३७॥ ॥ २३८॥ ॥ २३९॥ ॥ २४०॥ ॥ २४१॥ ॥ २४२॥ ॥ २४३॥ ॥ २४४॥ ॥ २४५॥ ॥ २४६॥ ॥ २४७॥ ॥ २४८॥ ॥ २४९॥ ॥ २५०॥ ॥ २५१॥ ॥ २५२॥ ॥ २५३॥ ॥ २५४॥ ॥ २५५॥ ॥ २५६॥ ॥ २५७॥ ॥ २५८॥ ॥ २५९॥ ॥ २६०॥ ॥ २६१॥ ॥ २६२॥ ॥ २६३॥ ॥ २६४॥ ॥ २६५॥ ॥ २६६॥ ॥ २६७॥ ॥ २६८॥ ॥ २६९॥ ॥ २७०॥ ॥ २७१॥ ॥ २७२॥ ॥ २७३॥ ॥ २७४॥ ॥ २७५॥ ॥ २७६॥ ॥ २७७॥ ॥ २७८॥ ॥ २७९॥ ॥ २८०॥ ॥ २८१॥ ॥ २८२॥ ॥ २८३॥ ॥ २८४॥ ॥ २८५॥ ॥ २८६॥ ॥ २८७॥ ॥ २८८॥ ॥ २८९॥ ॥ २९०॥ ॥ २९१॥ ॥ २९२॥ ॥ २९३॥ ॥ २९४॥ ॥ २९५॥ ॥ २९६॥ ॥ २९७॥ ॥ २९८॥ ॥ २९९॥ ॥ ३००॥ ॥ ३०१॥ ॥ ३०२॥ ॥ ३०३॥ ॥ ३०४॥ ॥ ३०५॥ ॥ ३०६॥ ॥ ३०७॥ ॥ ३०८॥ ॥ ३०९॥ ॥ ३१०॥ ॥ ३११॥ ॥ ३१२॥ ॥ ३१३॥ ॥ ३१४॥ ॥ ३१५॥ ॥ ३१६॥ ॥ ३१७॥ ॥ ३१८॥ ॥ ३१९॥ ॥ ३२०॥ ॥ ३२१॥ ॥ ३२२॥ ॥ ३२३॥ ॥ ३२४॥ ॥ ३२५॥ ॥ ३२६॥ ॥ ३२७॥ ॥ ३२८॥ ॥ ३२९॥ ॥ ३३०॥ ॥ ३३१॥ ॥ ३३२॥ ॥ ३३३॥ ॥ ३३४॥ ॥ ३३५॥ ॥ ३३६॥ ॥ ३३७॥ ॥

४९

[illegible]

चलं कानं चतुर्मुखं कवर्गं कं ग म सु ल प चतुर्धा विभक्तिं विना वज्रं किं नं ग म अ ह स्वा प वि च सं का नं स म यं चतुर्मुखं ग चतुर्मुखं मयं नं मय म ह गं ग प
र म ह किं ग म स्वा प वि च सं का नं वि भ व जं वि हा व य त्वा ह स्वा प वि हा व य त्वा स क र्ति का क ग वा चि तं ग म त्म ध्वा हा व य धा रं आ लि का लिं डु म धि त र ग म स म य ड
ई का नं व ज स ल च नू प कं ग व वि म लु म सु ल म ध्वा स र्वा ह न कं वि हा व य त्वा वि म लु चतुर्मुखं आ लिं डु स व सं किं ग म ल म रं म हा ह र्द किं ग क र्मु कं
नि हं ग वा म व कं म हा किं मं ज टा म क ट वि रु धि तं ग र व व का ल व दि कु आ क म म हा स रं ग व ज रं वि नं वा लिं ग क र्मु क ग म म हा स रं ग व ज रं स मा प
आ म लिं ग न्मु क द यं ग दि गी य र्मु क द य न ग ज च म म्ब नं ध नं ग रु गी य ड म व कं वा य स रं ध म्ब र व क र ग वा म रु गी य ख दं ग क पा ल ध नं ग क पा ल माला
लं क म म र्च च वि रु धि तं ग वि भ व जं क र म र्चि क ला धि प कि म र्कं ग वि क न न नं ही मं गं ग वा दि रं सा चि तं ग वि व ग नं व्या धु च म्म ग म ग र्च न न शि व वि रु
धि तं ग पं च म्म ज व लं दे व न च ना यं च न सा चि तं ग त्म लिं गि त र ग व ती दि कु जा म क व कु डि न ड जा ग व धू क व मु न न्त च म मु म शि क म ख लां म क क म क ला

४२

ली च य व किं धि व पि या ग वा म ड जा लिं गि क क पा ला ह र्मा ला य स र्ग म ग द किं ग म र्ज नी ग म्ब वा व जं क ला नि व ह हा स रं गं गं द य स मा व ह म हा
स र व न स द गं जा कि नी रु क थ वा मा रं गु वा हा ड वृ पि नी ग म्म प प्रा दि सं क्ता न स र्व सि धि र स र्वा द यं ग क र्मु क मं च न कं च रं ग व व र्मु डि न ड जा ग दि कु जा
न क व क र व द्वा रं च क पा लि नी ग द किं ग व ज क र्चि च आ ली ट प द न नि का र ग म क र्ग म द क्वा व द ना पं च म्म ज वि रु धि ता र वि दि क च च सा वा वा धि चि
ह दि हा गु का ग प ज य तं च म्म नं य कं न स गी न स र्वा स रं ग च क र्द नं स्ति ता दे वी हा व य दे व ता स द ग प र्व द्वा र क का को र्थ नि ला दि कु र्ग हा व न ड उ ल का
स्वा रू व द्वा र म्मा च म्म क र्गि का ग म्मा ता स्या हि क थ व ज प थि म द्वा र स र्कि ता स क्ता स्या ड पि मा सा द किं ग च ग वा स ना म्मा ए न य च व नं म्मा वा य ध
म न कान क ग य म ज दी य म ड री च य म्म धि नी य म प थ नि का ग वि दि क स्तो त्वा दे वी द्रो हि णी म ना ह री वा प ता स न म हा द्वा र पं च म्म ज वि रु धि ता ग
वा म क पा ल ख दं ग द किं ग व ज क र्चि का र न म्मा स र्व या गि नं र स र्व सि धि प दा य का र ग न न ड क व च द यं स र्वा स न च क वि हा व य त्वा स म य च कं स

मर्मसो रत्नामि रत्नांगमोडी कनकमणि रत्नामयका सर्वसाधकगणानां विह्वलनादं च मध्यमनयस्वापनात् ॥ आत्मा सदान् सर्वेषु श्रूयवा दविचार
 इमं गदश कुमलकर्माकुपाथ स्वाध्यायकापनात् ॥ वाधिसागे निघर्षुष्य बीजाच्छादय दर्शनानां कामनिवपक कषुप्रभप्रभतिवोसि नां ॥ २४ ॥
 वस्त्रोमककुदिनीया कथमपि च वृक्षवृक्षगता सो रत्नां पनमार्थेषु दीपना गसिद्ध कथं ॥ आत्मा यै योगिनी नां दुःखानां न गंधर्म संस्रमार्थेषु कालसंस्
 दुःखानां गंधर्म कथिदुःखानां संस्रगता वाधननामर्कगमाया संस्रपदार्थेषु कालसंस् दुःखानां गंधर्म कथिदुःखानां संस्रगता वाधननामर्कगमाया संस्रपदार्थेषु कालसंस्
 वस्त्रोमककुदिनीया कथमपि च वृक्षवृक्षगता सो रत्नां पनमार्थेषु दीपना गसिद्ध कथं ॥ आत्मा यै योगिनी नां दुःखानां न गंधर्म संस्रमार्थेषु कालसंस्
 दुःखानां गंधर्म कथिदुःखानां संस्रगता वाधननामर्कगमाया संस्रपदार्थेषु कालसंस् दुःखानां गंधर्म कथिदुःखानां संस्रगता वाधननामर्कगमाया संस्रपदार्थेषु कालसंस्
 वस्त्रोमककुदिनीया कथमपि च वृक्षवृक्षगता सो रत्नां पनमार्थेषु दीपना गसिद्ध कथं ॥ आत्मा यै योगिनी नां दुःखानां न गंधर्म संस्रमार्थेषु कालसंस्
 दुःखानां गंधर्म कथिदुःखानां संस्रगता वाधननामर्कगमाया संस्रपदार्थेषु कालसंस् दुःखानां गंधर्म कथिदुःखानां संस्रगता वाधननामर्कगमाया संस्रपदार्थेषु कालसंस्

[illegible]

नृकया गानकन दुष्यकिमाकन वरु निमिरुयागिनीपजांमनिपोष्टिचलकयत्तु राशुहं कर्मको मावी कर्ण शकावा होरुसोमर्दिनं यन अमंडु
 छेनचरुसमाकनसगापूनर्विजायक इरुवे मापूयातु राहमिनांमच्छिलोवां कर्वेयुजयेति कजावा असाध्यं रुगवतवागं डिवीरुनु न संसयतवा वा जयेति
 पूजयद्यन्दा मर्दिनं नयनद्वयं राकाशनमवनं चाकं ह्यनं धं साधके श्वामहा संमखो कर्वेनयप्यं यमं यमं पथकूथक गक निरुवंति सर्वज को मावी मच्यरुस
 दावा पछनिगी सुयानदकष नखसंजिपतवा पूनरुवकि कर्मोतिनरुफा मास रुकुहा रुग रुकुहा चन संकुक्षि मन्त्रे पातच सर्वरुग अकस्मादाग मत्यहि
 गम्बुव्याघाट मादिदं वा गीतवा रुकुमं च दं हेमिकन मरु मेरु रुग वा जवोन रुया न्यारु को मावी रुकुय दूधरुग नवकि मधूवा पीता रुया रुया अने कधारा मरा
 मागम रुव रुग पाका न बल कयत्तु रुकुहा प्राति सर्वा कि विविदि फंदिशिला कयत्तु अनावां नरु मर्दा धिवा रुकुहा देवां ममं अ न्या न्य रुकाथ रुकुहा
 अ न्या न्य इमिकयदिग कियोदि उं सविहया को मावी सूचयत्तु रुग रुकुमा नरु रुकुदि उं योदय गम चरुग रुकुमा नयदि पछना लो कयति सन्दनिगह

तिका यत्र बलवानां पटिका गुरुमणी यत्तु हर्षेन श्रुत्वा पवित्रास्तथा गुरु म्हात्मानिर्गतास्वी विश्ववज्रमहायुक्तिं किंकिनिजालवस्ते च यता जा
 धरु नादिनं गतास्तथा कुरु च सर्वेष्ववकादि समालिखतु विश्ववजावली कुरु कालावली कु मयरा गतास्तथा च कुरु कुरु म्या नूपमालव
 तगा कुरु कालावली यथा मु म्भुपा ना कथे च गपे वरु गयस्य वा कुरु कालावली समालिखतु गतास्तथा नो कुरु कालिखतु रक्षाणां डि समे न कला
 वीजविन्यास कं कुर्यात् कुरु कालावली यथा मु म्भुपा ना कथे च गपे वरु गयस्य वा कुरु कालावली समालिखतु गतास्तथा नो कुरु कालिखतु रक्षाणां डि समे न कला
 का एव पंचासु न कुरु कालावली यथा मु म्भुपा ना कथे च गपे वरु गयस्य वा कुरु कालावली समालिखतु गतास्तथा नो कुरु कालिखतु रक्षाणां डि समे न कला
 यत्र त्रिदिव्यधीरा गतास्तथा कुरु कालावली यथा मु म्भुपा ना कथे च गपे वरु गयस्य वा कुरु कालावली समालिखतु गतास्तथा नो कुरु कालिखतु रक्षाणां डि समे न कला
 वानुगपे चामादि ह्ये श्वरुपे यथा कुरु कालावली यथा मु म्भुपा ना कथे च गपे वरु गयस्य वा कुरु कालावली समालिखतु गतास्तथा नो कुरु कालिखतु रक्षाणां डि समे न कला

४१

कर्मवज्रविहावला समाधिकयया गवानां ह्यसफटिकं बां बां वरुणा ह्यदो गेयता गाम्भूतं मुखं सुकशा स्यात्तवनचरिपा र्धं तडा तया पवित्र
 फलपंचाङ्गिकं ह्यसफटिकं बां बां वरुणा ह्यदो गेयता गाम्भूतं मुखं सुकशा स्यात्तवनचरिपा र्धं तडा तया पवित्र
 मक वरा यथा गतां च म व मं वरुणा ह्यदो गेयता गाम्भूतं मुखं सुकशा स्यात्तवनचरिपा र्धं तडा तया पवित्र
 महा मक्ति चाक वरुणा ह्यदो गेयता गाम्भूतं मुखं सुकशा स्यात्तवनचरिपा र्धं तडा तया पवित्र
 त्मा चप कुरु यथा संविधा यथा गतां च म व मं वरुणा ह्यदो गेयता गाम्भूतं मुखं सुकशा स्यात्तवनचरिपा र्धं तडा तया पवित्र
 दिह्य सुवर्णिकं गतां च म व मं वरुणा ह्यदो गेयता गाम्भूतं मुखं सुकशा स्यात्तवनचरिपा र्धं तडा तया पवित्र
 गतां च म व मं वरुणा ह्यदो गेयता गाम्भूतं मुखं सुकशा स्यात्तवनचरिपा र्धं तडा तया पवित्र



यस्य सांख्यवृद्धरुजनां ग्रन्थान्तरसंप्रवृत्तमिदं पञ्चमं कृतं साधनं यत्नसम्पत्तौ ध्याननसर्वसिद्धिफलदायकं जांभवागर्हसंज्ञातं गृह्यद्विविधं
पितृगणस्मृतिं च नानासंख्यानां सिद्धिसंमतां ४५॥ स्यात्सर्वं सूर्यदाज्ञिहृत्कृतावकलाचनं ४६॥ कस्मात्तत्र कूलीयाफासाधयत्सूत्राणां पितृगणसंप्र
र्णकृत्तमं कुंडलोहागीतम् ४७॥ पद्मिनीयाख्यायान्ननसंप्रधर्मदत्ताविचक्रा ४८॥ कल्पाक्षकृद्बुद्ध्यां नृणां नृगुणकुण्डल्यत्वात् ४९॥ कस्मान्नृकुलं ता
मख्यायितावस्तुभगता ५०॥ पूर्वाक्षचविधाननसंप्रर्णसिद्धिजायते ५१॥ आदिपुष्पप्रसक्तस्याडाज्जीर्णपुर्णसिद्धिना ५२॥ समयादिस्वाफमातंगीसर्वय
त्सदा ५३॥ सांख्यसंख्यातुभक्तं ग्रहयत्सविचक्रा ५४॥ पंचोक्तं यथापार्श्वहस्तसंज्ञा ५५॥ यथा ५६॥ यदि संप्राप्य संग्रहं साधकसिद्धिर्वाञ्छिता ५७॥
एते मांसं हयमांसं च हस्तिमांसं च ५८॥ नवमांसं कृकरीमांसं संग्रहयद्विचक्रा ५९॥ पंचपदीयमाख्यातं च जसत्त्ववचायथा ६०॥ दशमीपंचमिषा
फलदं सुसमील्य ६१॥ सुगंधानिष्ठिगंधां बहस्य नडुकावयत् ६२॥ गुडिकां कावयत्संयुक्तं साधयत् ६३॥ पितृगणसंप्रर्णं च ६४॥ कल्पाक्षकृद्बुद्ध्यां नृणां नृगुणकुण्डल्यत्वात् ६५॥

कामयुवपिडिका कथा ॥ काकपञ्चविकाचश्रुति कृष्णपर्वत ॥ लघुगदप्येव वीर्य ॥ गुल्फपाहि सुहृत्सुतं ॥ अङ्गुलाभा इति गर्गहडि इह संजालिका
राकवधं हान्तं लंचनं वचनं पञ्चकुमानरा ॥ वामघट्टावदन्तं मूषलपाशकपालकं ॥ धनुस्वहा नृपसूक्तुपि श्रुति कर्जती वचनं घृणमाता ॥ गवता
समभनधपिके ॥ हाकडू काउचमंच चोविश्वयानिका ॥ वादतविद्रिकची चोसिलाहसिहमसूक्तं ॥ केवानदशिवावेव नृपवृक्षगुनेव ईवीगभनि
श्वनजीलके चवीजपूने केन पञ्च ॥ सूचिहकायकमंचमघट्टिहकाभिक ॥ ७ वंके मकुविहृयाघासफनिरुक्तमाजिका ॥ अघिने मूकवां लाहुदनेय
मोववधक ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

۵۸

[illegible]

चमजमशुलमालिखरुपापमिकल्पिगुरुताएतनकुर्यात्पवननादिगंगाहसंदत्ताजपत्सन्तुं ईका न हूमि एमधकं गमशुल हूमि हा गम द्विगुधं ह
मि साधयत्तु गमे वशुकिर्हं वन्यपि वी स्वचि रूपनि दि त र ग देवतात्मक मा चार्प्य सर्व वृक्षात्म मूर्ति हि र ग च ऊ घ उ ध वा वी वा मू ध्व प्र जा कि नी स
ह ग व ज म ज्ञो ल य धी मां घ ष्ठा वा द न क य मां ग ड ड्य द य न्य इ ह या स द य स न गु क जा न ग म यं से वं कु इ ह वा वि द्या य क चि त्क ट प ट ना ग म यं क र म व ल श्री मा न
न न का च कृ प या ज नं ग व ज ना दी फ व पृ ष्ठा ल य मि त्ति का य जां ग ल य य य य क चि त्सा वि गी र्थ द न्य ना न्य थ ग हूमि य नि ग हं कृ ता भी मां षा का न व ध य ह
ग प थि वी वं का न जा यी तां क न क क ल न ध नि गी ग पु ति स द कि र ह स कृ ति कृ ता रु या ज य त ग म कि रू ता सि त् दे वी मू म का म गु तं लि ख रु ग पृ ष्ठा धृ षा
दि ना पृ ष्ठा मूर्धं द त्वा वि च कृ षा र ग ह ग क्रा ध स द र्ज म ध्व म ड रु थ ग रं ग न ड ड्य मि लि ति र्नि ना धं म गु तं स ह जा द य गे नि ष्या ना म न कं पा र्थे पृ ष्ठा कं
पृ ज ना य च ग म म ह क स र ग व न्य सा दं क र्त्तु म ह सि ग स म च्चा ह न कु सं वृ द्धा र य चा न्य म कु दे व ता र ग दे व ता लो क या ता न्व ह ता स वा धि सा सि न्य र गः

३५

साहनाहिवताह सर्वपकचिदज चक्रयाह गमृत्कम्यामपादायसिष्यचवरममगमशुलंचलिखयानि वज्रवावाहि मूहमं गपंचसुनाचिकं
सहंपंचविंशतिरुदितं गवल्यसुगुवन्यायं सर्वधर्मास्तुतावकरं ईकावात्रयशानि पंचामरुनलपिगं चक्रादिगुहिनोदीर्घा नविशक्तिहा
गिर्गं गि क र का रे म च्चा र्थे ना हो धार्प्य कि मूर्ति ना ग य स र्जं पा त थ दी मां क र्थे ता य र प म ग य न व न स ति य कृ त स पृ मा न न वा नू षा म स र ग स
ज य न्या ह र्छी स ह जा द य म गु तं ग मृ ह्म ह स्ता से मा व स ग क ह स र्त्तु या व र ग पृ थ मं व क स र्त्तु हा दि ना यं का म स र्त्तु क र ग प थि म द कि षे क्ता न ति य
मं गु न स र्त्ति क र ग प र्वा रू र दि क क्ता न ति य मि ष्ठ स मा हि क र ग आ दी च कृ गु षा न न स र्त्तु य दे व का ष्ठ वा ग क तां गु ष्ठ गु षा ना न न का ष्ठ म कं पृ स र्त्तु
य रा प न व कृ गु षा क ष्ठ का ष्ठ म कं पृ स र्त्तु य त ग क र थ दि गु षा न व का ष्ठ म क कृ स र्त्तु य त ग क र थ च कृ गु षा मा न न का ष्ठ कृ स र्त्तु य क र ग पृ त दि गु षा
मा न न का ष्ठ म कं पृ स र्त्तु य त ग क र तां च कृ गु षा मा न न का ष्ठ कृ स र्त्तु य क र ग क र थ च कृ गु षा न व का ष्ठ म कं वि द र्वा र ग द र्वा वि पू र त र्वा न्व ह म

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

52

याति ग्राहकः स बधं कुरु पूर्ववत्तु गार्दववा नवा बृहत्तात्मीकया त्वा नाशि च ॥ याति ग्राहकः स्वप्नाद्दक्षिणदिशि नीयतां ॥ कुरु वज्रा सुधा ना
शी कालिको मय न नर राको लो नाद्रि कु सा कुया गे कुरु य स दर्शनं ॥ श्रुत्वा कुरु धु एता मायुः ॥ अक्रुध्यत पिशम चकंग ॥ हज्जर्क स्वप्न पूर्य दवा
चेक वषो च निश्चिंतं ॥ न कुरु वज्रा पुलिका ॥ अं व कुरु मात्वा विरु मंगं ॥ मं ला स्य काय दा स्वप्न पद्मा स्त न जी व कि राय था प दे ग मू का रि र जा य क
म सु रं च क र वा क ल न वी य क म सु र्म स्य मं भ न जी य रु ना क स्ता च मं प ना चि ना सं वा धि कु मे रा व ता न म श्रु प नं का था यि ष्या मि रा म रु तं रा व ता न क रं
ग म च कं पू न कं या गं म ध य द ह मं लो ना ना नि मि रू संपा फ र स्ता स कि क्रु ति दि क्रु ति रा मं स्त को ल रु संपा फ म क्रा नि या ग म रू मं रा त व वा न
ग रु ता डी पू न कं म ड पु म कं ग क रु कं त म रु य दानं द्वा व न धु स्य सा ध नं रा नं च कं त नं च व न य दि श्ये पु श म क मा वे हं ता वि स न रु व धं का र्थ म न्य क
वा न रा मि रा म्रा लि को ति स मा यू कं या क यं च वि च क र रा ह द यं रू का व स या श्च घ ट्ज न म पा र्श्वं रु हा य य त्वा वा यू वी र्जं रु द र्ध रा रा ग रु द र्ध रा

[illegible][illegible]

[illegible]

पतालि कल्प का भव कल्प यत्न ग कल्प कल्प न मूर्ति स एभि र्वा सर्व दर्शि रिर गाय र्वा वज्र सं प एष सं प एष ड सम गिय रवा अना पात नि वा धा ड ऊ न ना दि ड
पर्यय क्वा ना ना ग म न क लो षे च यो य रुद्र वि वा न य क्वा वि वा र्थ मा न या मूर्ति सं युक्ति ग वी य सी म म ग चि ह्म त स द ग लु थ क थि तं व र्जु म ल क ग शि ष्या
य शु ब्र व र्ज क षा वि ता ए ग न वा य ड ग अ न्य मूर्ति न भे य लि स्य स्य पू र्ध स क न व ॥ स त्या व डी स्य स्य पू र्ध का ट का की लि या ग की ॥ त स्या स्य व क ता
लु ह न रं स स्य ए म च रं ग दी र्घ का ल ता क नू भं स व द कि र्क क ल्पि तां ॥ पू र्ध प च न स र त्या क र्क क र प न ह्य न वा च कं ॥ का वृ ष्ण स्य क वा धि स ता तां वि
ला षे न ज वि य रं ग व म्बु वा ध ना द र्शो हं न द सु वा धि स ल क र ॥ न्द्र लि त्र ना न्द्र स रू त वि स रू न्द्र वृ ह रू क वा ॥ क न्द्र वृ ष्ण स रू न्द्र वृ ष्ण वा र पी न ह व ज ध न
नू ध न ग व य न्द्र ग्रा व ड ग म म हा अ म न ह ता न्द्र स रु ध न ॥ ध न ग्रा व न्द्र अ रु स कि जि ड प न ड ग्रा न क ना ॥ स र्वे म क्वा र्थ न द्वा यं वा वा क्का दि म थ य न
ना ग म थ नि स र्वे स र्वे स र्व दि द्या दि स र्वे म अ ला ग स र्वे ला क ष ड् ष्ण पृ थ क दि वे न वा स्य यं ॥ म मा दि का ष ष्ण य ड म थ नी प र्व वा स ता न्द्र ॥ अ थ म न्य ड सं प

वषट्कारं च वसु मातृ रूपं गणेशं च वन्दन्नाह वना सर्वज प्रसादाद्ददिसूर्या ऊम आषु रूपत वीरं स्वयं रूपं गच्छन्ति न स्यन्त्या नावर्तुमाका
 गपू विरक्तं सन जाकिनी नृपिनी कुजाल कृष्य देवतां गगना कुरुत मध्यं स्थाप्य तां जगत्प्रदोषं पूजां कृत्वा त्रम नाये च प्राप्त सूर्यादि तात्मजां रा
 पापोदिद गतां कला कर्माद्या मनस्स नृणां गुण नाव स्य तावंच योगे जाविता वयं पंचा वी स्य तावत्तु कर्मात्म नृनिर्दिष्टा रुपा रुक्म वज्र धन पञ्च
 मय मध्य पविस्त्रं स्य तावत्तु चतुर्मासं दिनं कुज द्वादशं प्रसा संप्रदाया गता चाना रुक्म संप्रदायं स्य तावत्तु हनिक वक्तु च पीता वरुण प्रवासत ग
 म्प्रवक्तु गम कर्तु च विष्णु वक्ता च चतुर्ध्वज गुरु गम नि स माका क मोलि टपद संस्थित ग वज्र ध्वज च दक्षि च स द स व कर्तु का ग पञ्चं विष्णु वक्ता
 गुरु द्वादश पाद सार्क ग मृगु वाम दक्षि गम हस्त म्रु च त्वा नि ग वज्र ध्वज च कर्तु ध्वज च दक्षि च स द स व कर्तु का ग पञ्चं विष्णु वक्ता
 गुरु द्वादश पाद सार्क ग मृगु वाम दक्षि गम हस्त म्रु च त्वा नि ग वज्र ध्वज च कर्तु ध्वज च दक्षि च स द स व कर्तु का ग पञ्चं विष्णु वक्ता

[illegible]

३१

लिचगुजकं गुरुस्यागता महादविजवा माहि पूर्ववत्तु प्रह्वपाय सुखादं च सर्वसंधिप्रविगुहा नाना नाथा हनुका कावेर सवि स्तु लंकवि
हानय नरायण महादेव सर्वयोगिनां नाथ इति राप्रदे दलष पूर्वदि श्रुत नाने योगिनी रा चतुर्विंशति संख्या बोर कि त्या या श्वषट्क गो पूर्वोदि
उरु नाने च जा कि त्या या श्वषट्क नथ ग उरु नाथा पाश्चि माहं ना माथा श्वषट्क पुनर रा पश्चि माथा दक्षिण कं खनु ना हादिकं कृतं ग दक्षिण माथा पूर्वोक्तं च न
पिष्मषट्कं न क र ग जा कि नी नृदि का च न च वि का उ प ग ह्ना था सर्वा लिका नृ व र्णी च क र्ण द्वे का उ ती ला क्ष्मी ग ना मा था गु स्त नी रु द्रा क र्ण लि ती
कं का ली जो ग ना मा व र्णी ह रि तो र्ध्व रु न का र्ध्व रु क मा द्य न रा ख नु ना हा र्ण म गो ती च वि र्ध्व रु क नृ क ली च च रा दू द नी म कि मा र्ण म न क र्ण द्वे रु पी ना ध्व उ
ग नृ पि र्ण म रु न वी स र्वा ध्व नु ज टि नृ द या रा पि ता र्ध्व क र्ण द्वे वि रु जा न र्ण वा मा हि का ग नृ क न र्ण दे वा नां च पंचो म रु क का रा प्र सा ती रु प द चै व क पा ल
मा लो ध वि र्दि श रा वा मा व र्ण ध्व वि रु या स म नृ प नि हा ग कं ग रु द्वा र्ध्व रु च कं च नी ल क र्ण च म ध्व कं ग जा कि नी च रु थ ना मा ख नु ना हा उ नृ पि षी रा य

चक्षुचक्षुः किमीचेवपुलावमीमहावसुभरा वीरमहीखर्वमीचलंगस्त्रीद्रुमकुययागने लावकिचतथातंचमहाहेनवीसुतागवायुअगसुवाह
 कास्यामादविमूलदिकामहयककुंखगाननाचकुवगाखवुगाहिकारासोमितीचकुवमितीसुविबाहुमहावलावचकुवमितीमहावीर्या
 यामिनीपुनतामथागमजलिनिजासतिवशुकाउसुवधतीराउकुमिदिमहाज्ञालावकुचकषुयाहगांचकुहृजाउकवकुंकापालखदा
 रुधवागउमेवकहिंकंरथासुककागादिगन्धवागपंचमहादिगोहृहावजसोलाविहृषितागपेतासतांमहाधावासुवचकुषुयागिनिगना
 नाहृवधायकायेपुहृपायादिकंरथागजुक्रमानूयधकुथुदिनीवातानिगुयकगपुमदिताहृनिविख्यावासवतोशुभमयविहृवाजकहृमिपु
 माध्यचदादशहृमिनिष्यकगजवंसचेषुहृकय्येजकधकुषुसर्वकंरायलिभमिसमाध्यातापीपुपीधदिपूनवाजवंचधकुवीरागांयागिती
 नांखलावकहृगचकुवाउषुसुतानाउपपायमगुलंकुमाहृगहृवपुनरपहिंभताहिनादशदशकुक्रमायकुग ॥ ३८ ॥ गहृतिवर्जचकुंरा

३८

गहृअन्यतमसंदयगनाधकार्येस्यनिश्चयंरावागहिकल्पपुमानंचकथमरुगगुक्रकागावागहिकल्पमाख्याताउपाउगकाटिसंख
 यामासहायानस्यपुथसंजाकरश्रीगीतिकोतिसुखगगपंचागेलंकुकाटिप्रपावमितातयमवचराजुतानिसेवांतिउकानिमूनिष्ठानिहिकशेव
 पवानुवाश्रयकदाक्रतावेकुहृदयचकुमीदंपुनरवावकुपीतवकुंयचचकालयापुमधरवावजधवीश्रुकायकुवेलाचनीबलपिकागपप्र
 नखमेसाद्योचगचनिमामकीचकुवापुलातोमवपंधजंशरुगान्वरसुखगगसर्गधसंधकुवजाचखिकिगहोखगहृकागपाभीचलाकला
 कताथीकुसर्वतीसमकरपुलागवलातकीनेगालाचहृकुदीपकुसाविकागमेमाककीपुहृनीचपमाककीकुविष्ठाककिंवाश्रुचलातीलदगुच
 मकिंवाजमहावलागउकीपासुक्रनाहीचवकुंवेकुंउगानगांराखचवजचकुषुवकुादिसर्वलकुगंराउपपीपुदवीगांस्वाहापायनचिक
 यहृगपुगालीकपदनापिबिहृयसर्वचकुकागपुधकुविमलायांचदीपपुथमकंसनंरातायकीकुविजातीयाहृपुहृवीमिष्यतंरायमहृव

[illegible]

॥ सुवर्णका तीलाह का भी मास का भी बहा निरु ॥ दाव की लहो आदि ती की वस्तु न गाऊ पीत ॥ चर्म का भी निशागि नीच वरु चक्र प्रथम ॥ शेषं स
वेकुं डर्या यथा हृदय प्रचक्र के ॥ ऊरु मरु विना तीया का मधु सुकृ लात्म का ॥ द्वितीय दोष क त्या रूप ह्या यात्म क स्व क ॥ पुहा के भी लू मी ने नप
ऊती गुन र स्वयं ॥ स्वनामा च नम मरु ॥ दुपहा वाद्या पकी हिता ॥ रुई रुद जा ला कषु सर्व चक्र का नय क ॥ रुहा क च डल द पाक दिल माह क
नील क ॥ घाता नात नव धी च हा गार्ह हाव ॥ हिता ॥ पूर्व दोष प्रसू क ना स्या ड वरु ॥ नामा दिका प वा ॥ अग्नि ने स स वा य वा रु र्मान का बा रा नि
नी ॥ यम दा इ की य म ड ह्री दु ह्री मथ ती यथा क्र मा क ॥ दोष वरु स ना का यो म् खात न प र क मा क ॥ पूर्वो रु व पश्चि म ड द कि ॥ रु म थ र स दा म क
रु नील ह नि रु न का पी न व रु ॥ रु का व य क ॥ स म मो च का का स्या ड कि ती दे की ॥ रु म थ ॥ उ रु म ड ले का स्या दि पश्चि म स्या न व क्रि का ॥ स रु ड म ल
ल भ व स्या च रु र्य पृं ॥ ध म स र हा ग नि म्मो ह ॥ प थ ॥ क र्म यथा क्र म ॥ द्वितीय चक्रं किल खं रु ती यं च डल ख क ॥ च रु थ प च ल खात्मा र्म म नं स

१०

[illegible]

कानां ह्यधिपकु कामयतु ॥ पुष्पायायात्मका मरु कूलो मात्मक लीत कर ॥ कायं कुर्याद्यथापूर्वं मानमभिरिक्तं वरु ॥ दिनजा सर्वं चक्रादि गान्धनं
 धमा मिमि ॥ अतनरुथगतो नाधिगस्य सुक्तिग कुर्याद्विचक्रादि निमकुन विवाचं च सूर्यपंच नजामयतु ॥ सुगंधं लेलन वल्क ॥ सुस्वापय सुभा
 ययतु ॥ पून गुरु कलसन पुतिमां ह्यपय सुदा ॥ पथ दका नान सु रगावक मगुल चक्रं पुतिमा दि पुयगयतु ॥ दश कर्म करु कार्यं व्यव
 हा मादिकय ॥ यतु ॥ श्री श्री ५ श्री लय दज चक्र मधिति सुतु ॥ पुष्य धपं तथा दीपं गन्धने वयमवच ॥ सुवेक मय कस्य अहाम कर्म न पुन्य
 तगा दवा अति मखा सर्व पुतिमा का न ह्यपुतिमा लज्जं संपो क डकि मो गत्य कामयतु ॥ मरु दुय निधो धर यथाला रुं दु पूजय तगा राजन
 दोन दा कि त्यं क गुरु दि च पुष्टि कं ग पुष्टि रुज न सो रा गं समा हृत्य च भक्ति कं ग भक्ति कं इषां या गं ता ता इरवा यय पुर्वग अपुति सुयथा
 दवं पुतिमा कुरु गस्तु ॥ गी यस्या धो यम भमर्च के चा पूष्य रुं रुतु ॥ नि नि वि कल्प क नूपम पुतिमा दव स्थापनं ग देवता ला के पा ला श्र

११

कि सुक मभयं यथा गयथा च सक्ति सुद वपूजा पूरु समन्वितं ॥ वा **शक्ति आगम यचक्र पथ मरु ॥** गुरु वा ऊ वायु चक्रं
 च चरु रुवती लकं ग वजाल मध का दया या गि नी नां यथा क्रमं ॥ आ का ग रं मय नं नाम सं हृद बुद्धि मातु ॥ गुरु जी हं सी चि डी य का की व
 डी कि रि मि का ॥ मय गी सा मु चू डी च गु डि वृ लि का का म ला ॥ वा ला च री सु ह ला की स ग नी रु का पि नि ली ॥ ग यी म कु मो व सा च ग र्छ ड
 लू की च च टि टि का ॥ का रू च की च क वा की से को न भी रु कं का वी ॥ ज ले वा की क वि ला डी नी ल गी चि रु मा लि का ॥ सु ना कं कु म ला च वा टि वी
 का क रं य की ॥ सा मा ल ह पि टा च व द ह मी रु ग म नि म ॥ न वं वा वा ही च कुं च व र्ग रु च क या द गं ॥ अथ वा स्वा स्वा रु वा रु जो या श्र व पु र्व व रु
 ॥ पुष्पा या यात्म का सर्व रु द ह वा स नी प वा रु मि रु रु ज या रु या च रु द पि नि स ता र ॥ अमु जा थ रु दं च रुं रु यं गु रु रु द कं ॥ आ ल कं डि रु
 किय च कं सं स्तं द रु नूप कं ॥ च रु थं ज ग वृ जं ता मं च कं घा ल कं म्भ रं ॥ रु मि र भ ध न स कं ॥ अग्नि कृ गु नि का न य रु ॥ अ ह्ना रु न स मा न

एष पार्ष्णिकं सहस्रकं ॥ अष्टाशुलं विप्रधातुं दत्तं कुलं पादिरुं कथा ॥ द्वादशं शुलवर्गं कथ्ये च उदरं गगनं निमग्नं च ॥ द्वादशं गुलिकं
 रघुनकुलं ह्यधिकालना ॥ अष्टकं शुलमात्रं न दत्तं ॥ गगनकुलवर्गं ॥ विंशदं गुलिकं ॥ नमः कथायां गगनं निमग्नं ॥ नुक्तानि यमकं ॥ नि
 हयद्वयं पुमांशकं ॥ कमानुवृत्तं कार्यं ज्ञानीयाच्च विचक्षणं ॥ अष्टाशुलं कथ्ये हि तं गगनं विना गगनं न रवः ॥ तर्थाक्षितानि कथं स्यामा
 नं न लज्जं ॥ कथं स्यात्तुल्यं न उदरं कथं वकावर्गं ॥ अष्टाशुलं तान्मेमीकं वधाजयं ॥ यद्विभ्रममीच ॥ तथैकं नमः वचनं द्वादशैव दिवा
 यथैव अष्टपुमानं नरं ॥ कथं स्यात्तुल्यं न उदरं कथं वकावर्गं ॥ अष्टाशुलं तान्मेमीकं वधाजयं ॥ यद्विभ्रममीच ॥ तथैकं नमः वचनं द्वादशैव दिवा
 लज्जं ॥ किं तुल्यं कर्मिकं कथं स्यात्तुल्यं न उदरं कथं वकावर्गं ॥ अष्टाशुलं तान्मेमीकं वधाजयं ॥ यद्विभ्रममीच ॥ तथैकं नमः वचनं द्वादशैव दिवा
 अष्टकं ॥ गगनं कथं वकावर्गं ॥ अष्टाशुलं तान्मेमीकं वधाजयं ॥ यद्विभ्रममीच ॥ तथैकं नमः वचनं द्वादशैव दिवा

नमो कर्म दक्षिण नमो जिका शर्कं वा वधु कृष्टि विवदी च न कृष्टु ठिका शर्कं ॥ सुकृतं माह नं कर्म मे स सा न न कृष्टु ॥ उच्चा न न धु मु व र्धु च वा य
आ न न भव च वा कृ ल द ध कृ स्ति क कर्म सा एत या न न स द व ता ॥ आ ग न व र्धु क नृ प स ता व य क ॥ इं का वा कृ ति या ए न दि रु जा का न वि हा व य क ॥
ज कि ता मू च्चा न य ल नुं ज टि ता द व ता ल कं ॥ अ व र्धु क कृ प्या सा न चि रु न ग भ कि कं ॥ व स्य मू न वा ग चि रु न का द चि रु न मा व र्धं ॥ वि कि ता
गो द चि रु ना च्चा द ना रि चा म कं रु व र्धु ॥ अ र्ध वा ज टि कं सा य मू न्या वा ह य रु त ॥ सु द द र्पा सा ज रु को न व रु स ल वि हा व य क ॥ २० ॥ रा रु ति
वा य व र्धु वि नि यं ॥ २१ ॥ अ थ वा कृ तं व रु च कं मा दि नि तो म क रु य वं ॥ पी क व र्धु सु हा व र्धु व र्धु ग भ ले वि रु पि तं ॥ य रु तिं ग भ या गि नी तो
रु रु व र्धु अं य थ क मं ॥ सिं धि आ धी रि म्हा ग पी ग जी म् गो मा र्ज वि की ॥ ग भ वी म ह्री पी ड रु व र्गी रु म् वी ग भू चि म नी ॥ म रु दी ग र्द वी रु दी च म्हा की
उ की क ता रु ॥ खानो सु क नी रु ल्प की च उ रु लो म रु की रु थ ॥ व स त्वा रु वि ला वी च म्हा म नी रु रु खानि का ॥ उ र्ध वा की स र्द लो च व्या ग चि या भि कृ टि का ॥

न कृती हा की गुरु उग्र मति वासिनी पद्म गजवं वरुं पथ च का स्व स्व वरुं उ वा पू ११ पुषा पायात्मका दवा उ पद दार वासिनि ॥ हूमी नरि मूखे च वरु
पानमिता च वा ॥ यं च ही पति वासि च आयुधा दिषु सर्व वरु ॥ नी नया का न वरु कुं स्वराव कमरुं ॥ पूर्वा न पश्चि मा च दक्षिणं दान वरु या ॥ बुद्धा
ही मा हू ॥ नी च को मा नी रे वरु वी तथा ॥ वा मा ही नरे वरु च माल श्री का ॥ पृथक् ॥ जाकि न्या डि वरु दान वरु पश्चि उ उ का न कं ॥ को ॥ वा वरु मि
महि मरु च वरु पद्म पानमिता उ वा ॥ दग्धा दि वरु या डि न त्या पि कृ ॥ का य वा को ॥ धर्म धर्म च वरु ॥ अरु न ॥ सैता ना नि हि पथ के अग्नि च के वरु
धरु ॥ मान गे स जा स नं च वरु मारु यरु यं क वरु ॥ वी उ स्तु ॥ न कं च वरु मा वरु ॥ वरु विन्य स वी उ उ ट नं वि वरु धं सै क नं स क नं य नरु ॥ नरे वरु ना दि वरु
का ॥ वरु का क म उ दा प य उ वा ॥ पद्म दि वरु के ना ली च दा डि म वि न्य का स क ॥ अ म ले वि ज्ञा ल नू द य था क मा वरु विन्य सै क ॥ नरे वरु मे नू द य य वरु वी ल
हि नी म वी ॥ ना क सी वा दू र्ग्य च दा प य श्री क पालि नी ॥ ना गि नी मा धि नी सर्वा दा प य कृ सर्व दा क ॥ उ वं म गु ल च को र्ग्य को न य सर्व संप दा ॥ रा

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]



अथ कदाचकं वञ्च संसनचकं समक कथा विचित्रवर्गं वञ्चो भवसा सगीधां कल कुमा गति लाति मा ॥ किमृत्वा च अपसन्न सामहावता ॥ बहिनता
ख्यापमि नीच संखिनि ॥ चिजिभी गजा महान्पापूपा चका नी विलासी नी सेखा ४ ॥ पृष्य कोमी क्रमदीच नी लास्य गड सुन्दरी ॥ बागा कुमहा ना
म च्चगामा ख्या महा गामकां ॥ मर्दना मद नपियोच कामिनी च महा कामिका ॥ सुखा रुवा सुखपिया च सुखमति मा दुपमता ॥ सोहा ग्य मनी सोहा
म मधुका दुपम सुखि ॥ याति नृपी स मा ख्या ता काल मखी न न नायिका ॥ पक्ष पायात्मको सर्व चर्क नो ना विधं तथा ॥ रुजाय धं पूर्व वरु ह्यारु
मि साधू मति सुखा ॥ स सा नं वत्तारु चरु खयं दु सुक का न को ॥ कस्मात्सं हाग कायं च मगुल लुषदी निधी चडुल लाजिका धं च घला धं च विगु
धि कथा पूर्वादिषु चडुदी याति नी हि यथा कुनं ॥ गो नी ची नी वना लोघ सगी चिन्त्य सत्यु नरा ॥ कामा वा सी चडुदवी पृक्ष सी सवनी तथा ॥ चगुली का
खिनी कुमा रु विहं या पूर्व वत्सदा ॥ वा का का स सा न चक मूदक मगुल मध्य को ॥ चाले सख्य वरु रुकुं घा वा य धं सवदं नं ॥ वा मा वरु दि पूर्वो

14

[illegible]

[illegible][illegible]



इति मातृभक्तकं चतुष्टयं तस्मात्तया इदं दायिदं तं गुरुमा त्वा गुरुं सार्यं नयन्तु स हवन्तु नयन्तु हरण कविं गतिना कदा सिद्धिना
उसंगयन्तु ननु गिरिवास्ती हि १ सिद्धिना मदनात्तु केव ॥ काविद्वल्लाकातां श्रावन्दा स्युः कच १८ ॥ कीडनरुत्तमसिद्धिं कादिहिरप
विह्वल १८ ॥ विजेयमाही कल्याणी हे न कसमायागं ॥ वजाचार्य पत्रं कुरु सर्ववीन नमस्तुतं ॥ सिद्धिदं क्षिप्रं ला कषु प्रमादान न किं न ॥ १८ ॥ वंहा
महेतं सिद्धि १८ ॥ पूर्वाक यागयागिक ॥ नेशागस्तु यमा कर्मन कर्मया ॥ गोविंता सत्क्राफिदादशोरकर्म वायवोह न को गुरु ॥ १८ ॥ मरुदा नवपुष्प
उरुयसक्तिमालना ॥ १८ ॥ दिना रिषमलाया ॥ सर्वसन्धिषुक पुन १८ ॥ तस्मिन्काले विहया मरुचनक मजने ॥ १८ ॥ पिप्पला १८ ॥ १८ ॥ गुफं हात्वा सिद्धि
सम १८ ॥ कलिगयले पदुर्व्यादे को न पेशा गुरु ॥ काहो निद्रापथ १८ ॥ मरुजस्य मलि १८ ॥ १८ ॥ कुरुवेला चतुर्थम मफम च पुनरुच ॥ नव
मस्का नदद्या कुयाद १८ ॥ गुरुका नकं १८ ॥ सफद १८ ॥ गुरुका नच १८ ॥ काविं गति १८ ॥ पुन १८ ॥ १८ ॥ कविं गति १८ ॥ कानंद १८ ॥ याकु यति १८ ॥ गुरुका नकं १८ ॥ सफ जिं ग १८ ॥ कानंद

七

[illegible]

अमि सर्वसहस्रिणादयं पर्वे नृपकुचकवृत्तामकुपिमं न्यस्रुवावेनाचनेपुमकुवितीयविनास्रुतगुरुतीयइंजानदद्यात्पंचमंजावकं॥
 अगुजानकदद्याइंजानं सफमकु॥ अममरुकावकं दद्यादगमेचसुकावकं॥ दद्याइंजानं दद्याच्च दद्यात्कावकं॥ पंचदशमंकावकं॥
 उणाइंजानं रथगासफदशमंजावंच॥ कविंशक्तिविन्यस्रुवाविंशत्सुकावदद्यात्कावंचेकविंशकं॥ वेनाचनमजानकिं॥ दक्षिणमस्रु
 पयदकुनी॥ यकिं॥ काकावदद्यादस्रुविंशमकावकां॥ चेत्तामिंश्चवांदद्यादक्षिणमस्रुनास्रुथा॥ चउमिं॥ यकावंचपंचदशमंजावकं॥
 गजयचत्तामिं॥ काकावंचेत्तामिं॥ इं॥ कोपचचत्तामिं॥ गोगुरुसफचत्तामिं॥ नवमस्रुचत्तामिं॥ दद्याइं॥ कावकावदचउ॥ रगसं
 पुनदद्यादकावपंचमंजावच॥ मूलमकुलिखदुषांचउ॥ अकवसाधकां॥ रुयगीवंलिखमकीसमतायुविविहितं॥ द्वितीयंवा मासुचसंपूर्णयकु
 यकिं॥ गुरुकजनपूयोस्रुविहं॥ यासह्यागेनी॥ नागाशक्तिवधं॥ चदवादीनां॥ कुमानवां॥ सदाकपात्मकायीमानं॥ सचिह्नं॥ पुन॥ ॥ तथा॥

७५

अमि सर्वसहस्रिणादयं पर्वे नृपकुचकवृत्तामकुपिमं न्यस्रुवावेनाचनेपुमकुवितीयविनास्रुतगुरुतीयइंजानदद्यात्पंचमंजावकं॥
 अगुजानकदद्याइंजानं सफमकु॥ अममरुकावकं दद्यादगमेचसुकावकं॥ दद्याइंजानं दद्याच्च दद्यात्कावकं॥ पंचदशमंकावकं॥
 उणाइंजानं रथगासफदशमंजावंच॥ कविंशक्तिविन्यस्रुवाविंशत्सुकावदद्यात्कावंचेकविंशकं॥ वेनाचनमजानकिं॥ दक्षिणमस्रु
 पयदकुनी॥ यकिं॥ काकावदद्यादस्रुविंशमकावकां॥ चेत्तामिंश्चवांदद्यादक्षिणमस्रुनास्रुथा॥ चउमिं॥ यकावंचपंचदशमंजावकं॥
 गजयचत्तामिं॥ काकावंचेत्तामिं॥ इं॥ कोपचचत्तामिं॥ गोगुरुसफचत्तामिं॥ नवमस्रुचत्तामिं॥ दद्याइं॥ कावकावदचउ॥ रगसं
 पुनदद्यादकावपंचमंजावच॥ मूलमकुलिखदुषांचउ॥ अकवसाधकां॥ रुयगीवंलिखमकीसमतायुविविहितं॥ द्वितीयंवा मासुचसंपूर्णयकु
 यकिं॥ गुरुकजनपूयोस्रुविहं॥ यासह्यागेनी॥ नागाशक्तिवधं॥ चदवादीनां॥ कुमानवां॥ सदाकपात्मकायीमानं॥ सचिह्नं॥ पुन॥ ॥ तथा॥

32

[illegible]

॥ इदं मनुमहादशी प्रसवायासिका स्यात् ॥ चक्रं च पूर्वभावा चामकाशपंचागा ॥ सकां ॥ प्रथमवेगचनं च संकावंदितियपूनश्च ॥ रुतीय काष्ठ रुदयानि
 कामं चतुर्थेन ॥ पंचमसंकावंदया कृत्वा न प्रथमपूनश्च ॥ इकां स फमदया वायवीजकु म्रुमपूनश्च ॥ इकां स फमदया दगमम्र कामं तथा ॥ रका
 नं नचमदया दगमम्र कामं पूनश्च ॥ जका दशपदं दया दगम कामं तथा ॥ इकां न च दया दगम चतुर्दश ॥ इकां न कं ॥ पका नं प्रथमदय चयी कामं वा ॥ नच
 रुचिका नं स फदशकु या कामाष्टाक्षपूनश्च दया ॥ जका न विंशमना जाविंशम इत्य स सूनश्च ॥ सेवने कविं ॥ दया दू कालं विंश न्य सूरगागका नं चतुर्थवि
 सेचतुर्विंश कालं ॥ षष्ठी ॥ शक कामं इकां न स फविंश कया म्रुष्टविंश क कामं को न विंश क तग ॥ विंशम र कामं कुज क विंश इकां न कं ॥ वाविं
 ॥ सोवदया इकां न च यमिंश कया कालं चतुर्विंश क अं पंचविंश न्य सूरगा ॥ षष्ठिं ॥ शमं वदया हा स फविंश क तथा यका ॥ नाष्टा विंश कुने का च
 साविंश कया चत्वारिंश दया अं चतुर्विंश मया र कामं दया चत्वारिंश विंश विंश क दय सूरगा ॥ इकां न चतु चत्वारिंश पंच न्य सूरगा स फविंश ॥

५३

सकम ॥ हवथ पूर्ववर्तिकां म कामाकनष चान्नापह पाय सूरुविकां गां चम दया का काटि समतिहलमु काक्रम ॥ नमि इंध्या इंद रुद नादयसा
 इहा इंद रुद रुद साहागां हां यां यामन इंद रुद रुद साहागां ॥ इति मनु स म्रुष्टया य कुपवा सूरुवनां गज कामं च मात्मक काष्ठ हां यां यामनु लयो वा वेना
 चनं प्रथमकु द्वितीय सेवदापय रु ॥ आका न रु सोयं दया चं चम कुन कामं कया षष्ठ चय कामं दया स फम स कामं कया म्रुष्ट मरु कालं चनं चम म्रुष्टा
 नं तथा दगमवे नाचनं रु कामं को दगम न्य सूरगा दया दू कामं चतु दया दगम कामं कया चतुर्दश न वीजं च पंच दया दिइ वा तथा वा ॥ दया
 कामं स फदशवेग चनेग म्रुष्टा दया दू कामं चतुका न विंश न्य सूरगा ॥ इकां न षष्ठिं ॥ दया स फविंश यया जय रु ॥ इकां न को विंश कुज
 कामा स च दयापय रु ॥ विंशम सेव दया कुगी कामं च क विंश कया दया विंशम इकां न चतु इकां न चतु य विंश कया चतुर्विंश क कामं दया हा पंच विंश
 म न्य सूरगा षष्ठिं ॥ शम सेव दया कुग हावे ॥ दिइ रु कया म्रुष्टा विंश य वीजं च न कामं चत्वारिंश पश्चात् चत्वारिंश दया इंद क चत्वारिंश कया

५४

नविह्नकमात्रगसिधुं कल्युहस्यन ॥ सुखविंससहस्रानि लज्जं सफदिग्भाभिच ॥ कृतमात्रसमाख्याताभरुषांकल्यनाच्यन ॥ सोनाष्टकान
मासायंगपुत्रिचकुगुक्तं ॥ वाधिसंमयमात्राहिविरुयागुक्तगोम्यका ॥ कृतकृत्यकृतसंधिवधोसहस्रभवनच ॥ संधयतिमहामयंसोनाष्टन
पुसचिकं ॥ नसावननंसेहावंगदुकिगुक्तपत्रका ॥ कुमथ्यपिचयागुक्तगत्यावजमन्याकना ॥ सभात्यहिकायमानेडुगुक्तकाचसिकायं ॥ अ
स्यभंरुविह्ननपूर्वगुक्तवावरी ॥ ननात्माकृतवकषेनीका नाऊनसचिकं ॥ द्वादशानिचलज्जानिष्वर्चतिचसहस्रकं ॥ कुतलोवीसमाख्या
नाहनाकेसुविचकुषोरा ॥ नमसोनाष्टकासंधिसहस्रपक्षिधीयन ॥ चउपष्टिसहस्रानिनाष्टोलेज्जामोक्तिक ॥ पित्रिकोसर्वसासुषोनाष्टक
संख्याया ॥ सोविलकविस्त्रया ॥ तारिसहस्रमवनच ॥ द्वाविंशकसहस्राभिचलानिबकुसहस्रकं ॥ कार्यकृतयासंधिश्चउपष्टिभवच ॥ नरुषा
सोनाष्टपुसिद्धकनाऊसंमयरा ॥ कविष्यामिकताथसोनाष्टदीपहावना ॥ पूर्वविदहउरुनकूनूपराग ॥ जानिउबच ॥ नमसोनाष्टपुसिद्ध

कनाकुसंगयथा कनिष्ठाभिनाथसो गकुडी पहावनारा पूर्वविदहउरुनकुनूपमणजनिवचगपनवाचयदी पो सो वा ह रुमिच्यवस्तुता ॥ ५ ॥
 म्बदीपगुरुकाहसिद्धरुमा विधायन ॥ उपदीपसुजागस्यप्रथमिथे के लोदये ॥ सो वा कुडी पहाथा नपुससंसर्वमलि या ॥ ६ ॥ गं म कुकंपीत्वा
 मजो कुपसचिंतं विदपनं कदा कपपुं कवकि मातमं ॥ सो का गक मपो पा कं गज क व ह सखं ॥ न च ना वं धा ॥ गन अध ना सो दयं कि च ॥ न स्प
 द्यापि मकुगविदसं पाठमपानकं ॥ रूपे यकि न स द हा कु को नं सर्वसंधिगं ॥ गं पु वि च य न न व ज ने ना ल्य वा धि गं ॥ न न न म कु या ग न वि द
 घहा कु मा न गं ॥ न न्द्रियं विषयं सर्वं विषं पना कु लोकि कं ॥ कपया मा नि कं ग ता स नो म कि ह उ कं ॥ वा ग का च कु म ध्व म हा य क च कु मा य किं ॥ ७ ॥
 मा ध्व द ला व पा वि सु तं वा न कु मा य धं ॥ तस्मिं का ल च स रु तां स फ मिं ॥ म कु नं प च ॥ पु हा पा या स न पा रु वि रु या च कु तो य को ॥ ८ ॥ ९ ॥ वा न का
 सर्वहम तपुवर्षरूप नाय न ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

५३

नां ग सं स्की ल रय मान पास्ति ता ॥ सर्वा पर्व धि न कु जा तु व्या दि स म धा रु ना ॥ च कु पूर्व ता वा च्य का ष्ट चे जा न पं चा ॥ क ग म्ब न्वा न्य य ग मं
 म कु म कु नं च न्ये स द्वा ॥ च कु का हा वं ना च न च कु द ग म्ब या गि नी ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 फका फक ॥ म्ब मा ग प हा का नं ग रु ग वा नि य थ क मं ॥ रु नी य म ध्य पा ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 नये ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 पृ पं च का ष्टा नि तथा दाने च कु छ यं ॥ सा ध्या ना मे वि द हि ता म कु धां ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 द्विती सिद्धि रु ना ॥ सामान्यं या ग रु कु भां न ह स्प न वि प रि न ॥ सिद्धी नां प नं मां सिद्धि वु ता तां च वु ता रु मं ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

सकविं वामहात्माही सखवाकवही तथा ॥ पूर्वा नमस्तु यथा ॥ अद्या पुनिरुत्तापुनिरिति ता ॥ कामकाधरया लाकमाहमानं च वज्रयत ॥ दिजा व्याप्या सु
दास्यमज्जुभां मंगुहं तथा ॥ १० ॥ व्याप्योपविहं च दयादयं न कल्पयत ॥ न कायाकिमानं च मुनिनिद्राविपर्ययत ॥ सर्वसाधनतंडुलनि ॥ सं
गानि स्यात्सदा ॥ रुमाहा कचपजां च तपंचाकुमालया ॥ दिवसंवा ननकुहं पंचानकर्यं कल्पयत ॥ पनमात्मा आत्मेनूपमविह ननिर्विसंकि नर
॥ मूका ममाचनसर्वं कामकिंचनेमाचनरु ॥ निव्यसनं व्याधुचर्म चपंच मद्रा विरुधितं ॥ पुनोपायोत्तकं यागीह न कल्पे विराचयत ॥ समनरुद
च योयां विह नसख मानसं ॥ गुमकवाकिरुतल पंच आवयन्य सत ॥ नानानकलया रानविह नपथिवी कल ॥ मथवा चानुजामासे च यो कर्तुं
सहस्र ॥ ११ ॥ मृसखोपय नति स्रजकाकिजक मानसं ॥ उद्यानयकुवे कामद्रुसकुयकुमाकिरुं ॥ मथवा ननु कलि रावा नु कन्नका नतवत्ता पर्वता ॥
नदीही नमहादधि कट पिच ॥ उद्यानरुतकूपवापु साद ॥ मथवमस ॥ चडुष्यथ मृदवे दानं मथपिजा ॥ पथिकलि मा ल्य ह्यापियू काचयनक

[illegible]

निचरागुगुदकापकातिवजनाधिकोप्रयागक२॥यागिनीरुक्मप्रादांघषत्वाटिखलुभवच॥यावाहीकल्यमाख्यातंषाउवकाटिसं
ख्यया॥सूखिमयाकुद्यानादीवाधिविरुस्यमृगार्जवाप्रहायतस्यपथकुजाकमतीकिजाटिमच्यतवापाचागलकुकाटिषपावभितानयम
वचगुगतिसर्वादिउकातिमनीडातिजिकायधक॥रुक्मिस्त्रुवतयागीसंवर्गसत्यवाचक॥वागावागीदिमिशुंचनायकिजगदुपिनी
॥रुक्मवसंवर्गयस्यासंवर्गपूर्वचर्यया॥सुगतस्यदशानातिविनयावेदथापिच॥नामासुजाकमहासापीवाधिसहस्यदशना॥यागिनिथाग
रुक्मसुवहसंवर्गवाचक॥वेविहायगागाकुडीकायधचसंरुक्मवाधस्मैसहागानिमोघंषाप्रोकीकिनसंराधेक॥सुगुमानंयदाचिहं
मिवमध्यधनीनता॥सहजकायमाप्रातिह्ययवेयात्मवोधयत॥यागिनीरुक्मसर्वासांदवतात्मकदशना॥धस्मैसहागनिर्वोभमहासुखे
विहावना॥पुसपायात्मक॥यागीगीधुवृद्धलमापूपाकानसमाधिकुहांदवीकिरुयंयस्यलीनतां॥सादयकुहाचिरूपायागिनीनांयदकि

[illegible]

हागतास्त्रिचन्द्रयद्यमकगादिमूदाकतंग। उ। कयगा। तथा। त्वा। तं। दी। र्घ। ल। पृ। क। या। जयं। ॥ उर्ध्वं। तत्पृ। कयं। प्रा। कं। म। ध्व। म। स्। समा। ग। मं। ॥ सूर्ये
पावगताः सर्वमकगादिगुहास्तथा। उदयनि। वि। पि। सु। दु। ग। मि। वा। ग। लि। ध्व। य। न। द्य। ॥ उ। र्ध्व। म। द्य। स। म। ध्व। कं। ह। त। य। स। र्व। ना। स्य। श। ॥ कर्कटसिं। ह
कुं। का। श्व। कृ। कृ। ष। कृ। ल। सं। ज। गा। ॥ उदयनि। वा। दि। ता। श्व। गु। ह। स। र्व। य। क। मे। र। ॥ ट। ष्टिका। वा। नि। ज। श्वे। व। म। ए। म। कृ। म्। स। मा। नि। ता। ॥ पंच। कला। प्र। मा। न। न। उदय
नि। गु। हा। चो। दि। ता। ॥ स। म। म। ष। कृ। था। चै। व। कृ। द्। न। ष। ग। तं। कृ। था। ॥ कला। श्व। उ। ष्टय। चै। ष। उदय। उदया। ग। म। ॥ हा। वा। द्य। स। क। नं। चै। व। कृ। ल। ना। म। स। मे। नि। तं। ॥ कृ। कृ।
दि। गृ। षि। ने। र्ध्वं। उ। च। उ। विंश। प। वि। कृ। मा। न। ॥ कृ। लं। तं। ष्वे। चि। रू। पा। या। ट। रं। ना। म। ता। द्यं। ॥ दि। गु। म। उ। किं। लि। का। चै। न्द्वि। या। ग। स। म। नि। ता। ॥ ल। ज्ञा। हा। ला। चै। वि। ह
या। शं। घा। हा। वा। स। मा। स। दा। ॥ आ। त्म। ना। म। स। र्वं। का। र्थं। ष्वे। प। न। षं। चै। व। या। जय। त्वा। ॥ स। त्वा। गु। हा। श्वं। क। मे। वा। श्व। स्य। कृ। नं। ष्वे। च। या। गि। ना। द्य। य। ला। यं। लं। कृ। यं। नि। विं
क। लि। यं। ॥ यं। गु। हा। स्तृ। त्वा। र्ध्वं। या। य। स्तृ। त्वा। स्तृ। च। ग। र्ध्वं। ॥ स्य। न। ग। लि। स्तृ। थं। म। र्जं। स्यं। पा। विं। चै। प। ष्वं। की। ॥ स्यं। या। गने। विं। ना। वा। सिं। गि। द्यं। कृ। लं। थं। या। यं। कं। च

लादयंचलाकर्मोहिमावेनिधनंरुवत्तानिगुवंरुवत्तमिशंगत्वातांपूष्यरुवत्तानांमर्कितुत्तावत्तवागहितावयत्तसफुकिंभल्लकंचकं
यागसिद्धिकनंपूष्यरुवत्तानांमर्कितुत्तावत्तवागहितावयत्तसफुकिंभल्लकंचकं
चतांयपूर्वोक्तवत्ताभपममावत्तव्यापनिकल्पयत्त॥एटिकसंस्तुतपुकिमादीनांमूनरुवत्तपिक्तं॥आकाशमगुलंचकंपेचापंचानपुक्तं
॥विमानंधुजपराकांचेभरितरूपविक्रमं॥समयसेतंसमयाहंकिरुवत्तावत्तवत्त॥येभरितसेतंसंवत्ताउधिरुपचसिद्धिता॥मायादव्याहृत
कृतीरुवत्ताउधिरुमागता॥अरुवत्तसंस्तुतनाथरुत्तापूष्यादियामिकोरागहानयागिनोम्याथेवाधिविस्त्रयत्त॥अननरुवत्तागताधिष्ठानरुकि
रुत्ताविचक्राभानिमज्जनंसेतंसोनेरुवाननचेतामये॥सगंधरुल्लभकल्कलंरुचस्त्रापयत्त॥पूनपुष्टकल्लभनत्तापयत्तकृत्तापयत्तचदा
काशरुवत्तागिनीचक्रमगुलं॥पुकीमादिपूष्यरुवत्तयागिसरुपवत्तायत्त॥दशकर्मरुक्तकायंयावेच्छावहोवादिकं॥अकीगीचेउत्तीलयत्त

चरुमधिकिष्टिगपयधपे सुधागभं दीपनेविद्यमवचय सर्वकर्मपूत सुखरहा मकर्मपूजयत्तु दद्यान्मृनिमूलासर्वप्रतिष्ठाकामय
 वधश्च। प्रतिष्ठा लज्जामं प्रोक्तुमिमांसा ल्यकामयत्तु। मृदंगं तु योनिपाधे यथा नार्हदुपयत्तु। हा जनदानदादिभ्यं जनदुस्तिचपुक्ति
 को। पृष्टिं तु जनसौभाग्यं समागत्या च्छमन्तिकं। शमन्तिकं इह खर्गयागं नाना इह खमपदवं। मृपुतिष्ठा यथा दवं प्रतिष्ठा कर्तुं सक्तं।
 निष्पस्ये ध्यायन् कर्तुं कर्तुं वा पुनश्च हनुतु। निर्विकल्पकप्रेषा प्रतिष्ठा दवत्तु नं। दवत्ताला कपालाश्च हिष्ठकं गम्यतं पदा। तथा च
 संकिष्टं दवपूजापूज समन्वितं गच्छेत्। हारुगवान् दववे विहावज्यागिनी। सर्ववी वसमापया वज्यागिनी कल्पयत्तु। १५५
 मिष्टी वज्यागिनी कल्पयत्तु महात्तु वाज्यवेगुलं कर्तुं प्रतिष्ठा विधिपुनः कर्तुं यथा विधिपुनः कर्तुं। १५६ वा १५७ वा १५८ वा १५९ वा
 सर्ववी वायागिनी हिष्ठ समार्जं कृत्वा पृष्टिगदवदानवसत्तानां कथं सर्वचदायकि। यदि सर्वरुग्मस्तु मृनि कर्म शुभा शुभं। मृथ सरुग

९९

वा-द्वीहामं सत्त्वपूजाय कर्तुं। इति च संभयं मलि मृप नयत्तु ह्युत्तु। १६० दवी महा माया वा नास्मान् कथं। सत्त्वहामान् सान् सान् सत्त्वानां
 दवनायकीं। सत्त्वपूजा मम नास्ति किं वा विधि महादवात्तु। सत्त्वहो वगुग्म मृवज्जुत्तु हाम संतवश्च। कस्माद्गुग्मो वी मृहामं संकल्पमात्र
 यारुग। १६१ दवा प्रवेकानि हामकं मृदिलज्जामं। मृमिहामकमेतुं मृनि कर्तुं नि को नये। मृष्टांगुल समाने ये यावत्तु हस्तं सत्त्वकं। मृष्टा
 मुले निवृत्तां कथं गुल पादिकं कथं। १६२ दवा मुले वगुग्म मुले वगुग्म कर्तुं च दवा कान्ति मवचं। १६३ गुलि को सुन कले त्रैविहिका नवम
 मृष्ट गुल मोर्जं दवा नाकलवचं नं। विंशदं गुले कसुन मेलका जा गमन्तिका। तानि च यम कसुनि ह्यद्वयं यमो न तदं। कस्मै न नृपका
 यथा नीचे विचक्रे। १६४ मृको न स्पृष्टिहो गदिहो गं खलितं रुचत्तु। सर्वतानि च कस्य सा मान्यं पाने लज्जामं। कस्य सा ह्युत्तु हा गने गुह
 कर्तुं वका वयत्तु। १६५ ह्युत्तु हा गने ने मित्तु वया गयत्तु। यथा वाहन ममी च यथा सत्त्वमवचं। न वा कवदितो कार्ये यथा इह यमा

ला सर्वसंपत्तिकारिणी ॥ द्विगिधामध्वमाह्वयानिष्पु कं पसु मूलां ॥ चक्र शिलासमाहा लापुदिसि द्विस्त्रि न सदा ॥ कृन्दन्मंति हरस्त्रिग्वानुष
 वेदये सन्ति लाभा ॥ निर्धूमविमला चंद्रि वा गोप माह्वद्वि कृता ॥ चन्द्र कान्तामनिपखा कृता रंग कनकापमं ॥ पृथग्नाग विहा चोपि सर्वपापं कुबसे
 दुःखचक्रपृथग्नाग कृता मसन्ति लाभा ॥ सफहा मलु वरुणं नार्धध्वयं संपदं ॥ चंपकाका सलाशील मालंतीगीतगन्धवान् ॥ कर्पला वृक्षा ग
 न्धिश्च शुभस्त्रोताधि परपवशा ॥ श्रीगोवर्धो मदेगाथं गं विवा सव सुख नरा ॥ श्रीगो मीवनिधो धो श्रीनिवसे सखा बहुराष्ट्रा वसुदेव गंध
 कृतिगाल जे नरम कृतिरा ॥ धृजचामल सवज स्यसिकाच गजा कृतिरा ॥ निष्ठु दद्विजा वरुणकापिभु महाथे दरा ॥ जे पांशु हसंपाहिना
 यवा नाग संपदं ॥ चंचला हि मूला काला क्रिगिरेवा वेदधूमला ॥ रुवन्ति सुस्तु लिगानि विहं म माह्वजा कर्मा ॥ मूरुपु कं पितृ शास्त्रि मूरु
 सानिनिस्तुलं ॥ मूरुज मन्ति वामेन मूरुस्थे ॥ किमदिनी ॥ कुरुविद्रु चिना वासो वकि ॥ गभजु यंधु वं ॥ नृपा नां च ॥ नाथं यदा स नाथेन

१०१

ध्रुवं ॥ विचरुं भुक्त्वा मवर्जु ॥ तिकर्वं नरा ॥ वृजपला गमेलां रुद्र ॥ अस्मि तथे वि नाग कृता ॥ सर्वो गंध ॥ अलज्जयाहि गन्धवान् ॥ पाथामविपद
 नयदिग्धा ददी ॥ नमरा ॥ चराचरनि नादाया रु मंदुकि पाघवान् ॥ सिमिहि माय मानावा वज्रया पार्थहानिकृता ॥ वक्रं य गल सय्योस्त्रि
 उकुल गीधे सन्ति रुद्र ॥ यामोहयान काजा वर कथय किमहा रुयं ॥ जय सफरुता दद्या दन्ति संतापय नरा ॥ पृथग्नाग मूल वेस्तुदिं कुनि
 संतापका मय नरा ॥ आचमनं गता दद्या रुदन्ति संति कृ मा नरा ॥ अं वाधि वृजा मखा हा ॥ अस्त्र सुखा ॥ ओं वज्रले नाय स्वा हा ॥ वज्रस्य ॥
 ओं वज्रयस्य स्वा हा ॥ इस्त्रल स्या ॥ ओं वज्रं कवे नाय स्वा हा ॥ कील वृजी स्वा ॥ ओं सर्वपाप दहने वज्राय स्वा हा ॥ कीला नां ॥ ओं वज्रपुष्पा
 य स्वा हा ॥ अस्त्र मुक्तु ल स्या ॥ ओं सर्वसंपद स्वा हा ॥ दध्मन्त स्या ॥ ओं वज्राय स्वा हा ॥ इवो स्या ॥ ओं अपुति रुत वजाय स्वा हा ॥ कृश स्या ॥
 रुता इत्क मला सन च्चिदेव नानिष्पु नै विद्रु वीज पविन कं मगुले चक्रं विहा वयं ॥ समये चक्रं सन च्चिदेव नानिष्पु नै विद्रु वीज पविन कं मगुले चक्रं विहा वयं ॥

102

[illegible]

[illegible]

गधकजायकगयागिनीककुंडकस्यकुसुमार्थं कृतनिश्चयः ॥ पद्मवलाचवस्त्रमिधर्मचपुसनादयंगचक्रकायस्ययागनस्यसंस्थवदाम्य
 हंगडकाकियागजाहनं बहवजसुनूपेकं ॥ नायकीजकीनाकाकताघयडागवंद्रितागवाधिविहं सदागुक्रं जिह्वायांचकनध्वं ॥ रावम
 देवगुडीयासहजच्यहिलकुमं ॥ इतीहन्दामखनेवदनशुकावयकनरगवलंचक्रयसर्वासांभलीजालीसुलजहां ॥ हामंचसर्वतनेवययं
 वरभादिकावयकंगरुपावन्दितमाहुंगनाहंगं गूवाहूतनगुलिकावापिसूत्रस्य स्वयंवीवहाधिता ॥ रुगमस्थयुजोपधीनत्ववजिकं ॥ मगुलं धा
 दुनांसचनानायोगपकाशितं ॥ योनमहस्मधनवासिमहाकोलान्वाय ॥ तथेयागयांचलेपबललेललीलयवलिंगास्त्रोहा ॥ सवायुधं होला
 ईवाहलिंगंगुहीलातावहूथयाद्यावदागककिपिभुक्रुहिरा ॥ जंयोमोमुधुमुकलिविद्युक्तिं हनश्चेचरदवेदरुमानयस्त्रोहा ॥ वाभचनकन
 मूनकहोसंभर्तिलिखितं ॥ स्यास्यकवकाहोहगरीदेकावचक्रयलिवंभलुपदलिखित्राक्रमजपदगीकनभरुमं ॥ जंवेजकाथावला

उत्तरुतदहपचविधं गथात्मा कं मानय इंदुदगाल्मीकं मयापंचगय सहितवितरगवितरु माउकं वाणु चिं कृत्वा कनवी न कृत्वा दकन सन सचय
 ह्यगुगु नूपमविदिनं जिगु वलिंदया ह्य सफाहनादकधरा यारुयनि ॥ यदि न चयं कि सफमदिव सख सुखं कृत्वा घटक प्रक्रियान यां पेवाह्यत
 ॥ वेवेकि वयोपनयन विमिश्र ॥ अंग गगन क्रूरिगमस्तो हा ॥ अनन पुजावीरु मुख लाष्टं सफ कफं कृत्वा ॥ कस्या विदिन दामे स्थापय क मूलवंध कृत्वा ह्य
 ति ॥ अं मकाकि कृत्वा मका गदुकि मका र जाहकि त्यां गलं मेका नां मडवरी धरा देवदह्य मख व भानि स्था हा ॥ वलि रई सापे मिक वष्ट यादित्वं
 स्थापय ॥ यस्य कस्य वि को यो मख वंध य व हा मपठि न सिद्धि ॥ अं न मरु निभ हे व वाय चिलि ॥ कि स्था क नूप मप मखि का रं कु सु य भामि ॥ मका
 ट ॥ गगन सप मका य मा हा दि सं शि मा खिलि ॥ स्था हा ॥ ३ क न मरु म पु क ह ह न लाष्ट कं को न क विं ग कि या रं प मि क प ग ह क रं वा कि या रं च क
 का ॥ लाष्ट कं क प य लि ल प द वा रु व कि ॥ अथ वा वि व ल व न वा कि का स प प म ल वी ज य रु न क न वी र म स का न वी जं वा ॥ पु क मां व रु सं या य

१०४

महिषगु क व र गा वा हं नू धि व ग ला य च रु र्द ग पि प य ध पं व लिं द या ॥ ह्य ॥ इ कि वा ह स र सं ग क रा म न रु र्द नी का ध वा क न च रु र्दि ॥
 कि क प य रु ॥ गी मा प्रा का ल व भ कृ ता रु व कि ॥ अं कीं कीं इं रु वि द ॥ स्था हा ॥ अनन मरु म ग म मय म हि म का वा सि य स्था ॥ अ प क्रि य द धि वि न स
 ति ॥ की न के प य रु क ॥ अं व व क स्था मि व रु ला का धि प य रु क वृ श ग रु र्द क य ॥ न रु वा ग गि लि ॥ ना ग य ॥ इं रु र्द ॥ की स्था हा ॥ न रु वा ग रु मा र्ज न
 म रु ॥ अं म रु वा इं रु र्द स्था हा ॥ उ द क पि न रु य न पं पु का ल य रु न रु वा ग ना स न ॥ व ला म खं स फ ल रु कृ ता रु र्द न व द्वा क न ना ग य कि ॥ अ प मा
 गे म ल व द्वा व रु र्द न ना ग य कि ॥ स फ प रु का रु ग ही त्या दाल म ल मा र्ग वा ध व य रु ॥ म य वि न स कि उं रु म रु रु र्द ॥ अं न मा च ॥ रु क रु रु र्द स्था हा
 ग पा ग व रु नी प य रु रु रु र्द ग म प क न मा रु न ॥ गु गु नू ल च न खं क रु क न वी जं रु थ व च ॥ पु क मां गु प रु रु न या कि ॥ ध वा यं स र्व रु रु नां स री रु वि कि
 या रु व रु ॥ अं न म रु ग व ति रु क म र्दी चा म रु चिलि मि लि पा रु वा अ म कं व स मा व य स्था हा ॥ इं रु रु व वा क रु रु र्द ग रं स प य रु थ ॥ गु म लो ना ग स प

१०१

हिरण्यकमुनिगुरुं गतस्त्ववसं श्रुत्वा ह्येकमुपसंगहं वने ॥ जीवादिहा जनात्यन्तपीतचन्दनसंगहं ॥ गोर्धजनं लिङ्गाख्यातं मातृजं च छिन्नायुतं गड
रुमं गोर्धजस्यैव मधुमं नलिङ्गाख्यं गमूधमं मांसं संयुक्तं वसायनविरक्ष ॥ रुमं गवपृषपृषिङ्गश्च उडुवृक्ष सर्वलज्जं ॥ व्याधिनिमगनादि
स्याद्भयजं गमिकावधं ॥ चतुसमाहवन्निस्पृहं धर्मवत्सदा ॥ चन्दं च न किपात्तयं चन्दं च न कितायिनि ॥ सूर्यो सूर्येन पातयं स्यात्तुहमिभ
स्तुविगजुतद्वत्समायास्कं न भेदेयाच्चेति सुगं ॥ येषां भक्तकृत्या गमनाय वद्वन्ति गर्वदा ॥ वासनं पदानं पविशुद्धन कर्मभ ॥ जीवभवनं
सर्वगुणपङ्कगणीयथा ॥ निबंजनपीतहविरं मलामलविवर्जितं ॥ गुह्यश्चानुवयश्च चतुर्दशविवर्जितं ॥ प्रसन्ननिर्मलं सुदुर्किञ्चित्कल्लिक
स्तन्निर्गुह्यस्तुटिकरुवदेवपिगुवाधने मरुम ॥ मत्समानं तथापानं स्त्रीसंगं च विवर्जितं ॥ धीवा विनीतं सुगुणं सुदहं पविपालयं गोमार्द्य
दिष्यं समायुक्तं गुहाकस्य प्रवर्गय ॥ देवतावाधनं कार्यं शूलिवलिस्मन्त्रितां ॥ स्याद्विद्वत्तया निष्प्रविद्धिन्ने मरुजापि ॥ दानपूज

१०८

नाहं संसयतु ॥ श्रीचिन्मय नवद्वयदमस्तु सर्वथा ॥ विवक्ष्य सर्वथागत्यां समासा नां विदत्तका ॥ वाचनं सर्वं ह्युक्तं वाक् स्मृतं सति ना ॥ १ ॥
हृत्तवा-ह्यामि लोकि कच सेदास्ति ॥ सर्वयोगिनि समायोग ॥ जगत्पञ्चवर्त्तिनं ॥ अथ योगिनिपुतं जनगुणोक्तं ॥ २ ॥ साधकं वज्रं
गोहियागदोचकं वायुस्तनकं ॥ संवत्सु विवक्ष्य प्रकृतं न ता ॥ कृपाशर्कं ॥ अथ कृतं चरुं ह्युक्तं ॥ नायागवृत्तिं ॥ वज्रं नृप समाख्याता
अवतिथिगिरि वक्तं ॥ योगिगण ॥ ३ ॥ ह्येते च पुतं न साधये ॥ अथ चरुं ह्युक्तं ॥ नायागवृत्तिं ॥ वज्रं नृप समाख्याता
हलाहलादियागदोचकं ॥ नायागवृत्तिं ॥ वज्रं नृप समाख्याता
प्राप्तं न च पुतं ॥ अथ चरुं ह्युक्तं ॥ नायागवृत्तिं ॥ वज्रं नृप समाख्याता
मार्गं यत्तु ॥ अथ चरुं ह्युक्तं ॥ नायागवृत्तिं ॥ वज्रं नृप समाख्याता

[illegible][illegible]

वयम् ॥ हकारं हकारं वयम् ॥ हकारं गन्धनाय हकारं ॥ हकारं वाची हकारं च श्रमताका नलु हा वयम् ॥ हि हकारं दिव्याति चिकन विव न यदि दी
 क्रि नो विषय न संदहा मकु सिद्धि न जाय न हे म द नं विकला कश्चि हरे विद्या न जाय न म द न विव न म कि जा नो म थ न न कि
 ॥ न लु ह स ह न च व क ल हा कु य ति धु वं ॥ ति दि का उ सखा वा पि पे च क न न गी न व ॥ कु धा व या गि नी स र्वे पा या स्मा न न कं वं क ह ॥ व्या धि
 सा कं ह यं नं वि द व कि ह या न का ॥ गु व नि डा गु रू डा हि स लु डा ह न का न य न ॥ श्र म न लु ह यं नं सिद्धि बा ध न नि स ल ॥ न च व र्ज य ल
 ॥ पु र्व व र्ज न ता पि नं ॥ पा स य दि धि स य कं च व न वि द स य नं ॥ या गी या गि नी म लो य न च व य दि धि ना दि नं ॥ स र्व सा ध न नं व लु हा ग ह
 ग लु न क ल य न ॥ न स ह द कं पा स दि धि बा ह च क ल य न ॥ प ह वृ धि व लं क ल यो हा य ह स प द ॥ स वा ह न न स य यो ल न न क
 न प द ॥ द य जा म ल जा च व र ॥ जी पि ष च म ध जा ॥ वृ क जा च कृ जा च व र ॥ ल य ना न ही क ल ॥ सा धी पं च वि धं पा कं य ल का ष वि धा स लो

२११

१॥ ग म जी सु फ वि ध नं च क म ॥ मा वि ध न न ॥ ना ना द न वि धा य न म य स नं स प व र्ज न ॥ ति कू रि क का कं च म ध लि गं च जा य न ॥ श्र न न वा
 शु की व नु र्वा दी नं क ह वा य न ॥ पृ ष गु गु म ध पं च व लिं द या च श्र न न ॥ क र्पो च वि धि स प र्ज न जा य न च व ल वा नु र्वा ॥ स या स यं य
 दा चि रु दि न दि न क जा म य न ॥ न वं य ग व लिं दी य स या स व म दा म य ॥ शु र ग क र्प म क ल व स का म ल का नि च ॥ पु ष म क ल नी व स य दि
 वृ षि म ल का नि च ॥ गु ठ स कं व लं ग क म क द क क को न य न ॥ स या स व मि द पा कं पा र्थ व न व लिं मि रि ष ॥ श्र न न का श च र म यं ध र
 कि ष ष च न पृ ष च धा न्य कं ॥ म ल यं ग म लि वा का न (गो ल य कि) व ल्के लं ॥ न ता नि स मा ग नि पा दां श न पु क ल य न ॥ दा डि गं स लि ल
 सा पि गु ठ ला ष य नं ह व ॥ जा य न मे दि वा च व डि हि दि व स वि द न ॥ प ह कं मे वि र्व स य मं कि षा ना ग कं ॥ ला ॥ दा डि म च र थ वा नं ल वं ग मा
 ग धा वि न ॥ गु ठ म क व लं च व स फं वा द का य न ॥ श्र स वं गी क ग नं च जा य न स ह री क लं ॥ श कं वा स ह सं वा रं श्र ला यं क र वृ धि मा न

कस्य कस्य च हाव कस्य सर्वयोगिनी वसं या कि साधन वाधि मूलका मान हं रं कता कता न स्य माना दु प म ध क ता सर्वपाप पुण्य म् कु ग ता य पं नि व
 ई न ता कामना सर्व सिद्धि क्रिया गिनां रं व गु द्य य ॥ सिद्धि ल जा स्य सिद्धि न वि क ल्पं ने व को न य क ता मू न्य थ रु वे या ए न चि रं सर्व प्र व र्त्त क ता ती र्थि
 का ना कु मं न छं म् म न न चा च ता र्थ क ता क ता स ना प नि स्या क् स मू पं पं थ क द रं ॥ ७ ॥ ह्य ह्य ह्य ग वा न्द वि न स्य मान स्य थ ग त रं ॥ सर्व म य स मा या
 ग ह्य क य प स दा स्मि ता रं ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ ॥ १०५ ॥ ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥ ॥ १११ ॥ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ ॥ १२० ॥ ॥ १२१ ॥ ॥ १२२ ॥ ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ १२९ ॥ ॥ १३० ॥ ॥ १३१ ॥ ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ ॥ १३४ ॥ ॥ १३५ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥ ॥ १५१ ॥ ॥ १५२ ॥ ॥ १५३ ॥ ॥ १५४ ॥ ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १७० ॥ ॥ १७१ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७३ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७५ ॥ ॥ १७६ ॥ ॥ १७७ ॥ ॥ १७८ ॥ ॥ १७९ ॥ ॥ १८० ॥ ॥ १८१ ॥ ॥ १८२ ॥ ॥ १८३ ॥ ॥ १८४ ॥ ॥ १८५ ॥ ॥ १८६ ॥ ॥ १८७ ॥ ॥ १८८ ॥ ॥ १८९ ॥ ॥ १९० ॥ ॥ १९१ ॥ ॥ १९२ ॥ ॥ १९३ ॥ ॥ १९४ ॥ ॥ १९५ ॥ ॥ १९६ ॥ ॥ १९७ ॥ ॥ १९८ ॥ ॥ १९९ ॥ ॥ २०० ॥ ॥ २०१ ॥ ॥ २०२ ॥ ॥ २०३ ॥ ॥ २०४ ॥ ॥ २०५ ॥ ॥ २०६ ॥ ॥ २०७ ॥ ॥ २०८ ॥ ॥ २०९ ॥ ॥ २१० ॥ ॥ २११ ॥ ॥ २१२ ॥ ॥ २१३ ॥ ॥ २१४ ॥ ॥ २१५ ॥ ॥ २१६ ॥ ॥ २१७ ॥ ॥ २१८ ॥ ॥ २१९ ॥ ॥ २२० ॥ ॥ २२१ ॥ ॥ २२२ ॥ ॥ २२३ ॥ ॥ २२४ ॥ ॥ २२५ ॥ ॥ २२६ ॥ ॥ २२७ ॥ ॥ २२८ ॥ ॥ २२९ ॥ ॥ २३० ॥ ॥ २३१ ॥ ॥ २३२ ॥ ॥ २३३ ॥ ॥ २३४ ॥ ॥ २३५ ॥ ॥ २३६ ॥ ॥ २३७ ॥ ॥ २३८ ॥ ॥ २३९ ॥ ॥ २४० ॥ ॥ २४१ ॥ ॥ २४२ ॥ ॥ २४३ ॥ ॥ २४४ ॥ ॥ २४५ ॥ ॥ २४६ ॥ ॥ २४७ ॥ ॥ २४८ ॥ ॥ २४९ ॥ ॥ २५० ॥ ॥ २५१ ॥ ॥ २५२ ॥ ॥ २५३ ॥ ॥ २५४ ॥ ॥ २५५ ॥ ॥ २५६ ॥ ॥ २५७ ॥ ॥ २५८ ॥ ॥ २५९ ॥ ॥ २६० ॥ ॥ २६१ ॥ ॥ २६२ ॥ ॥ २६३ ॥ ॥ २६४ ॥ ॥ २६५ ॥ ॥ २६६ ॥ ॥ २६७ ॥ ॥ २६८ ॥ ॥ २६९ ॥ ॥ २७० ॥ ॥ २७१ ॥ ॥ २७२ ॥ ॥ २७३ ॥ ॥ २७४ ॥ ॥ २७५ ॥ ॥ २७६ ॥ ॥ २७७ ॥ ॥ २७८ ॥ ॥ २७९ ॥ ॥ २८० ॥ ॥ २८१ ॥ ॥ २८२ ॥ ॥ २८३ ॥ ॥ २८४ ॥ ॥ २८५ ॥ ॥ २८६ ॥ ॥ २८७ ॥ ॥ २८८ ॥ ॥ २८९ ॥ ॥ २९० ॥ ॥ २९१ ॥ ॥ २९२ ॥ ॥ २९३ ॥ ॥ २९४ ॥ ॥ २९५ ॥ ॥ २९६ ॥ ॥ २९७ ॥ ॥ २९८ ॥ ॥ २९९ ॥ ॥ ३०० ॥ ॥ ३०१ ॥ ॥ ३०२ ॥ ॥ ३०३ ॥ ॥ ३०४ ॥ ॥ ३०५ ॥ ॥ ३०६ ॥ ॥ ३०७ ॥ ॥ ३०८ ॥ ॥ ३०९ ॥ ॥ ३१० ॥ ॥ ३११ ॥ ॥ ३१२ ॥ ॥ ३१३ ॥ ॥ ३१४ ॥ ॥ ३१५ ॥ ॥ ३१६ ॥ ॥ ३१७

अनलपयत् ॥ द्विकामानंदनशाकार्योदिव्यवसप्रयागतश्च ॥ द्विविह्वनसमाश्रित्यंजनिहमध्यामा ॥ स्वर्गकामनजायस्यसमाश्रित्य
वमाऊवं ॥ पूर्वनिवासान्स्मृत्युजायतुतलयागवान् ॥ अहर्निशसमं कृतानाशेषछत्रमेवच ॥ षष्ठीपबलुहामाशिघटिकाकुनिपाजय
तु ॥ हादग्मकुलमायामाश्रित्युल्लेखमाहर्ति ॥ षष्ठीकलापमाश्रित ॥ साक्षाद्वादभंगुला ॥ ऊहानवमूरुचकाष्टयमनामवाश
मोहककुचविह्वयावहिस्रतोसचानकर ॥ षष्ठीचर्मितायासांलकुहा ॥ हासकर्मभ ॥ हावयश्यागिन्यादिंकालाकालनिवावभ ॥ मरु
लोकेनितकृत्यायोगिनीलेकजापतथा ॥ विश्ववृषंमिदंचिह्नंयुगदुकिजाहिनां ॥ स्वहावाप्रातिनेमात्म्यंयन्कीनांलग्नयास्तुत ॥ हासंकर्मा
हितदलुपवमाशिविबमानिकं ॥ सर्वोजकीलुविह्वयाधर्मोदयान्तवस्तुतां ॥ हासयेहसमाश्रित्युक्तेकस्याकवस्तुच ॥ पंचवक्त्रविजानीया
प्राग्मद्योपचवायव ॥ हासिनाथवंवीजवज्जवावाहियागवान् ॥ पंचविजोमिहामाशिअहिस्रनामपंचमां ॥ अथानसप्रवक्षामिहामकर्म

११४

[illegible]

त्वय नयजलकाकपकमलिखित्वा उर्ध्ववातायनजिपह्म उच्चाटननक्रवावापिमानवाहिसंक्षित्वा कर्षेत्वा तुल्यसफाहिमकिंवा कृत्वा
 यस्य वा वासुकनित्यनरुस्य गजोद्वारवति ॥ १॥ हस्तो १॥ स्वभाकुमहिषानां स्नाननित्यनदिना ॥ २॥ हस्तो १॥ अपक्तिरुपहस्तं गुरु
 सुनवमेलनकर्तुं लंघयितुं ॥ ३॥ नागमन्त्रिकासमनका लयेतु ॥ ४॥ हृदयमकुमालिकाजोपल्लवसुचउर्ध्वविशेषतया ॥ ५॥ अरुथदंजननस्य
 सर्वजाकिनिपन्थि ॥ ६॥ अं रुतलि ॥ ७॥ गालाहा ॥ ८॥ सर्वस्यार्जुनमकुथो ॥ ९॥ ककुपस्यत्यवसादाय हस्ति ॥ १०॥ रुडि ॥ ११॥ गृहीत्वा गृहधूपपुदापयेतु ॥ १२॥ ननय
 समयाकिमदंसापिनिश्चितं ॥ १३॥ अं उदकनसमजिउदकनसंरुवा ॥ १४॥ नाचगुरुपकुच ॥ १५॥ उचिधमिहावल्लभा ॥ १६॥ मसको ॥ १७॥ पासाचव ॥ १८॥ उ
 समागकुति ॥ १९॥ सूर्योदयस्वाहा ॥ २०॥ मकुचउप ॥ २१॥ लाचक ॥ २२॥ कथ ॥ २३॥ गे ॥ २४॥ नकावालेचविंशतिवारं भवच ॥ २५॥ कपचउर्ध्वदिशुकिपसे ॥ २६॥ कनिवावभंग ॥ २७॥
 होतु ॥ २८॥ स्त्रीस्वामिमानवा ॥ २९॥ समकन ॥ ३०॥ सुखनल ॥ ३१॥ मकुजापंवा ॥ ३२॥ नरुवह ॥ ३३॥ नवयागवलंपरु ॥ ३४॥ सर्वया ॥ ३५॥ गप ॥ ३६॥ मंगा ॥ ३७॥ हाव ॥ ३८॥ नक ॥ ३९॥ मखिलं

१२५

इव रूपनिवर्जितं ॥ सर्वहावनशुचकर ॥ सर्वयागभागवान् ॥ सर्वमकुसमायागात्सहजयागवर्तु ॥ १॥ अथवभूतपुकिष्टायामकुमकुपुसात्र
 हां ॥ यागिनी ॥ २॥ कुरु ॥ ३॥ वायु ॥ ४॥ सुवापकर ॥ ५॥ अदिहि ॥ ६॥ गुरुनीयं ॥ ७॥ सदा ॥ ८॥ चाय ॥ ९॥ क ॥ १०॥ मचये ॥ ११॥ मगं ॥ १२॥ ला ॥ १३॥ काव ॥ १४॥ नन ॥ १५॥ कप ॥ १६॥ लाव ॥ १७॥ कनि ॥ १८॥ पन ॥ १९॥ पुमि
 मकु ॥ २०॥ यथा ॥ २१॥ अं ॥ २२॥ पुकि ॥ २३॥ मा ॥ २४॥ चो ॥ २५॥ पा ॥ २६॥ क ॥ २७॥ व ॥ २८॥ च ॥ २९॥ ॥ ३०॥ सु ॥ ३१॥ वी ॥ ३२॥ क ॥ ३३॥ ग ॥ ३४॥ क ॥ ३५॥ क ॥ ३६॥ स्फ ॥ ३७॥ र्य ॥ ३८॥ या ॥ ३९॥ सि ॥ ४०॥ का ॥ ४१॥ ला ॥ ४२॥ व ॥ ४३॥ सं ॥ ४४॥ ह ॥ ४५॥ म ॥ ४६॥ प ॥ ४७॥ च ॥ ४८॥ दे ॥ ४९॥ व ॥ ५०॥ ला ॥ ५१॥ वि ॥ ५२॥ न्या ॥ ५३॥ म ॥ ५४॥ ह ॥ ५५॥ स ॥ ५६॥ म ॥ ५७॥ कु ॥ ५८॥ म ॥ ५९॥ र्दि ॥ ६०॥ का ॥ ६१॥ व ॥ ६२॥ म ॥ ६३॥ क ॥ ६४॥ क ॥ ६५॥ क ॥ ६६॥ क ॥ ६७॥ क ॥ ६८॥ क ॥ ६९॥ क ॥ ७०॥ क ॥ ७१॥ क ॥ ७२॥ क ॥ ७३॥ क ॥ ७४॥ क ॥ ७५॥ क ॥ ७६॥ क ॥ ७७॥ क ॥ ७८॥ क ॥ ७९॥ क ॥ ८०॥ क ॥ ८१॥ क ॥ ८२॥ क ॥ ८३॥ क ॥ ८४॥ क ॥ ८५॥ क ॥ ८६॥ क ॥ ८७॥ क ॥ ८८॥ क ॥ ८९॥ क ॥ ९०॥ क ॥ ९१॥ क ॥ ९२॥ क ॥ ९३॥ क ॥ ९४॥ क ॥ ९५॥ क ॥ ९६॥ क ॥ ९७॥ क ॥ ९८॥ क ॥ ९९॥ क ॥ १००॥ क ॥

११३

॥ स्मृता ननु द्विविधं यथा उक्तं नां कला कर्म ॥ सर्वशुद्धिविज्ञानिया रूजममया ह्वं ॥ सर्वरूपनकं सर्वमाशुद्धि न विधान कं वाचमु संगत
ह्वनं च पथ च्छु क ह्वन वादि हं ॥ नाम सं गति शुद्धि रू या ग या गति निरुक्तं ॥ मायापमजगत्सर्वं महत्तुलकं यथापया ॥ उक्तं सखिदं ह्वनं यज्य
जाहि धानकं ॥ ह्वये गुं मूखात्सर्वं माया सिद्धा कल कर्म ॥ उपदगमममानं पुनिसंधि महासखं ॥ रुस्मि को लु दया शुद्धि वृद्धा रू म एत च न ह
४॥ श्रुतं च पाणिनी मनु च उ ह्वकि सुख दया वस्तु वप ॥ शशुद्धि स्या द्वय हा व स क ल्य ता ॥ वा वा क्का म कु मे वा क ४ शशुद्धि ४ सर्व हा व क
५ ननु द्विय विषया ली कं सम व सं सर्व या गि नी ॥ धर्म काय कं शुद्धि स्यात्सं हा ग कायिकं वच ॥ चिरु निर्मो गं काय स काय सहज कायिक ॥ वे म
ल्यादि पुनस्तु च उ रू शुद्धि लि प्य ॥ क व चं म लु मं शुद्धि शुद्धि या सर्व या गि तां ॥ वलि म कु ष शुद्धि स्या रू ह हो त्ति मा ल नं ॥ स रू म कु ष या शु
द्धि सर्व क मे च की ल कं ॥ ना ना था ए ष या शुद्धि या शुद्धि ४ पर मा र्थ का न् ॥ च र्मे मा सा स्ति स द्वि स्या धा उ सर्व च द व ता ॥ कि व रू ता उ म क न वि

[illegible]

सर्वजनप्रिया ॥ कंकनीसानभीहं साक्षि ताकाभिनीयताचरि कामावदानिकाचरुसूर्योनिनाहूका ॥ अङ्गिगतिधागिन्याजकेकस्युदाद
म २ ॥ हृदिनाकु सर्वचउदगं मडिकिं पनराजकांगुलीदरा चेरुस्यवांगुलदर्शयत् ॥ अर्धसमानकालकुअंगुलदर्शयत् ॥
सर्वेषां लुधागितां हृदस्माद्वर्धमानकां ॥ नानाक्रमविहया सर्वजगत्साम्यव ॥ कनिष्ठाकस्यपुदर्शयत् ॥ वाकूकुतसेकु ॥ नामिकादेशय
यो हृददाहस्यपुदर्शनीगे चरुसूर्ये हृदकीसांललनायोदिपथयेच ॥ कर्जनीदर्शयत् ॥ अर्धमोचपुदर्शयत् ॥ वज्रपथयेच ॥ गानउद्धमलि
पथयत् ॥ ललाटदर्शयत् ॥ यदिसेतस्यपुदर्शयत् ॥ उक्तीषां नरिसंथागी कदाचदयपाणिनाह ॥ अङ्गुचदर्शयत् ॥ अर्धदप्यनरस्यपुदर्शयत् ॥
मंथयत् ॥ सर्वचरुमूडयायत् ॥ अर्धदर्शयत् ॥ अर्धमदिनीरस्यपुदर्शयत् ॥ पुहात्वनपथयत् ॥ अर्धदिव्यदियमकावत् ॥ अर्धदिव्यमकावत् ॥ अर्धदिव्यमकावत् ॥
हिरस्यपुदर्शयत् ॥ अर्धमधुसूतपंचहातिविहृतममळकां ॥ अर्धकागं दर्शयत् ॥ अर्धसूर्येनस्यपुदर्शयत् ॥ अर्धन्या कनूहसम्यक् नीलीयाहा

[illegible]

११८

यथाहु आकारं तस्य दर्शयन् ॥ रुदया हूतं सर्वं लोकस्य यत्पवनमाकुशतया मदिवा दर्शयथाहु प्रादरुलपुदर्शयन् ॥ शुवस्य मिक
तयस्य पमपुमिताम्बनागो गमुं दर्शयं यत्तुकपालं तस्य दर्शयन् ॥ सर्वे सन्धिषु यागीनां पुहा वा काशया गितां ॥ लिं गं दर्शयथाहु गु
र्कतस्य पुदर्शयन् ॥ अकुशो कुशार्थमायात अवा रुव समुद्रजा ॥ के मरुतुल दर्शयथाहु पर्वत तस्य पुदर्शयन् ॥ शुव-सो मरुधवा मुय
र्वतासां नदीयथागे करुं ॥ स्य गतिया तात्री पृष्ठे रथ पुदर्शयन् ॥ सहज संया गिती पाउ प्राप्य रुक्मिणि रात्र नोत् ॥ वस्तु दर्शयथाहु वा
ग तस्य पुदर्शयन् ॥ सर्वे धर्मो ह्य हाव धूने वात्स्य पथ ककुक्षत ॥ दर्शनोष्ठ संगु क-कवा द-क किण दर्शयन् ॥ सर्वे रुज न विन्दन वासना
विन विप्रवा ॥ जिहो लो लयथाहु रुज ह रु पुदर्शयन् ॥ रुफि सर्वे मखाता मु प्राप्य न माघ दर्शनात् ॥ जमे नि दर्शयथाहु स्कन्धे न
स्य पुदर्शयन् ॥ तउ नं पा न वायू ना कृन् कयं स्य किं ॥ निरु सर्वे दर्शयथाहु ककुं तस्य पुदर्शयन् ॥ अन्तर्गालयषु सर्वे रुप ठका

कृष्णकृष्णसमर्थहस्तस्य एतच्छास्त्रपठनं च दर्शयन् ॥ न जानामि वना न ह्यग्रं पवनस्वकायमाह ॥ हास्यं च दर्शय शास्त्रकंदनं तस्य पु
 दर्शयन् ॥ वाग्ध्वजं वाग्ध्वनं च पद्मं च चंदना ॥ नाथं दर्शय शांतिगीतं तस्य पुदर्शयन् ॥ किञ्च वनं सर्वमायायन्त्रं ॥ हस्तपुत्रावतः ॥ क
 जालदर्शय शास्त्रसूत्रं तस्य पुत्रं स्यात् ॥ मत्स्यं च वनमाया मिनाजीयं कालं तात ॥ ज्वं प्रजिगम्य ज्ञातुं योगिनीं मृदास्थं पद्मं वा ॥ जाति
 हस्तं वा वं विहृयाच वज्रं च कर्कशं ॥ पद्मं कालं पद्मं च हस्तं वा पीठं ॥ नायकं ॥ ऐक्यं पर्यं नृपं हस्तं कुरुवा ॥ सुवर्णं ॥ च न धर्मं च विहृया
 यावद्वयं च वं ॥ जातिभीजालं मत्स्यं संहारं वमीलिनं ॥ वजाक्रमं विहृयास्तीनायकं नृपिणी ॥ आधिपादं स्वहा वाहुकं च सर्व
 पद्मं वा ॥ उक्तं स्वहा व मत्स्यं संहारं मत्स्यं ॥ मृदा संकेतका स र्वायागि न्यात्युक्तिं लक्षणं ॥ मगुलं च क मध्यं पूर्वां क वज्रं ना
 यकं ॥ यस्य फजिगम्यं क मध्यं मज्जोऽस्यं च यागिनी ॥ अकि न्यादि द्वादशमनामका नादिषु लग्नकाः ॥ यागि न्यादि चतुर्विंशिका लक्षण

[illegible]

संक्रुवां॥ मीलनं यागिनी पाकं पत्रमसिद्धिं कृत्वा नय॥ कदाचि काले माहूयास्तु फलसिद्धिं कुदायकी॥ यादगी कर्म तादृशं यादगी तादृशं फलं॥
 फलं कुरु कसं वधयागिनी जायत स्वयं॥ कुरु नीतिं पुत्रो जायत स्वयं॥ पुमाने गमस्तु नीतिं यादगी सत्यवादिनी॥ चरुसंवात हस्त्या नृदं
 संपदं सर्वतां॥ मीलनामीलनं समं वा मंचदकिं गतिं॥ तत्कृपं कुदात न च नृदं वस्तु नैजकां॥ कापं मगं न न हा ज्ञा ज्ञा ह्यं पूज गंधवा
 ॥ मोहद्वेषाग रागं वैरागं मानं डयेकं॥ नृदं का वृक्षि काप्य ह मोया विडु बली च॥ गमस्य व्या न मर्षं पिं हि व रु र्वं गं॥ खदमागं सृष्टा मंच सृष्टा
 मृकृ सोपवां॥ नृदं सूर्य यागिनी दशानर्था यक्षिं॥ दृष्टि का॥ तस्य वपु कि म्प्रा कृथा॥ गोहि रदायक सदा॥ दपे नै जल पृ कृष्टं स्वपदी पत्रं गुह
 क॥ आकाश पत्रं कृ मृद दवा नां च सूर्य का गमसि मृ कि पुवाल तफ कांच न जाल कां॥ हा ला कृ था कु कप्यो सुगु वः स्या ज स च ॥ रुय कृ मं क
 पन च मथ न चाद सन्निधे रावलि लेखा मगु ल प गम कि पृष्टि कु वाच क॥ माने लम झाट यो च नृ कृ द्वा दृष्टि मे चो न॥ यथा कर्म प्रदात वं

१२०

संकट परपदिं का गम प्रका र्ये प्रवृत्ता मि संच च न च यागि नां॥ च उवा न गत प्राभं वा मवाहन का म्य गं॥ सखं वं कृ वि हू या यदिं॥ चि हू वा ह
 कां॥ च कृ था या दश मृ डा ता दृशं व्या न मा च न र्मा ना दी प्र कृ त मा सा य गि वा या सर्व संधि कीं॥ कुरु कृ र्यो ल हो दृष्टि र ह या या स रु द का ॥ च व
 द्या स फ कि हू या प्रा प्य न सर्व संपदा॥ वा ना हि या गि नी प न्नो इ ह वि गे ह का ल कां॥ वा धि पा कि क ध मे च सूर्य क स र्व या गि नी॥ वी र्ये म धि पा दा
 एव वा ना द्या या गि नी सदा॥ या गि नी सर्व वि क ल्य प्र ह कृ द्वा च दृष्टि या च ल॥ प्र कृ ति चि हू स्य व न्ध ना र्थे क चि हू वा॥ उ व मा या वि ला क ना
 स ना मृ ड ज कि नी॥ संच र्ति पु व मा र्थे च मृ कि द्वा चि का॥ च कृ द्वा च म वा हि सर्व या ग य स स्य र्मा॥ आ लो क श कृ व र या गी प्र का सं सर्व ना डि कां॥
 या गि नी च क म॥ हा व य यो दि मा न यं॥ या गि नी मृ चा य य कं स फ कि ग कि या स कं॥ त वा द्वा मा हि ध्वा ने न सर्व वा धि स व कं॥ म कृ ज न य यो
 य न्ना संचा र या ग या गि नी॥ व र्गु नृ प य आ न स्य वा ना द्या या गि नी प्र च॥ गं स दं न कृ ता स क ह कृ मु हा न प ज य रु ह र्व ह वा य रु ह र्व ह र्व ह र्वा

[illegible]

नीनांतथाजाचानवधुमकाभा उच्चावयनिसुखधुश्रुतिप्रायसधागिनीपुन्ययागिनीनाडीमध्यमासंकिदुचयाश्रयवाउमनूक्रियामेथ
नंगुक्रंवकमासंजंनकं॥स्त्रीसुक्रंगंधंचलिगपममलोपेकरुव्यंवा॥दिग्गमासेसेवगजपुन्यंस्मग्गनंतिलमासुपकिपिधितं॥संज्ञासेनकगभव
स्वानहस्मिपखननं॥विदुमकुंशुक्रवकमकुं॥अयंचपकिदुमकसुगव्यंमहिनीगउप्यदुसर्वकालपूयगितानंवावहनकाद॥ऊऊऊऊऊय
कनिमीगंसेल्लावगं॥वाधिविदुवधउरप्रदिगसंख्ययापीच॥पिथापिथायकयावायूचक्राकागहनधउक॥नपिषद्यडाउ
हस्याहिवृषासनोकवां॥स्वहावधुमकदुयाप्यपदमर्थवाचकां॥अकंरुस्वाकूनदनीपहावहनवपिकों॥धउषदिगकानाकुडदधका
लउरवचगी॥सापहासनसोयेचरुसर्वसुखालेयीं॥पुऊ॥मममममपुकाकस्वाकसादयी॥हावेनापिबिकल्पासासनंसंज्ञाहिवकना
रु॥चऊपाकालयोगासाहृदयसर्वनायकी॥नीनुदहसिधागमलापहावस्यऊनंतिरे॥मीमासुमेधियादाऊऊडियांनगंवकथं॥मेथल

विज्ञानं चासमाकथयामास पताकाभवनदासं च धुजागन्धकूटकांगमकिहागार्धहानं च किंकिभीजालकं पुनरुसिंहासनमकूटं च वल्लनाताविध
 कथागालाजवर्षापयी ० स्थागुद्विष्टियस्वरावकादरावीनंवीनस्वरीयारानसर्वमज्ञापकाधत्तवा जोषिसहजराषयोषद्विंमहावकात्मकं
 वास्वन्धकादुषविषयमिष्टियकर्मकर्मिकाविषयमदंरथातुषधदंसर्वयथाकुमातवाहृषगकर्तृकहसनंसहजं नान्यवस्तुषु वा वादि
 दिनपयागपुपुहत्यायात्मगषचरासहजयागिन्यस्तुषुषद्विंमहावकात्मकं नान्यपमगेहृषसंविदकाकर्तृकसंविदकात्मकं
 मज्ञादमदमयवस्तिताहागामचनेयनवृष्टिषुस्वसयययागिनीसुखेगाधाय्यमानं महासुखहादभक्तार्तननागावर्जवायुप्रविष्टस्य कककुड
 वृयागजं वायागिनीचनसोख्यस्वनायमिहिश्वगस्यकवाचवंगावलोहृषत्यागुद्विष्टियषुवर्जकांवीवृजीवस्वरीरावनचकमध्यापनायकीवा
 स्फकिंमसंययागीमकुयकनायकींगानाविक्तल्यमज्ञास्तुसहजविषयनामनांगवलीसंस्थानपुष्पकूप्यचसर्वयागिनीवाविष्यसंजम

[illegible]

भासमसासिके १५॥ मूल द्वादश रागल चतु वंगुणी वच ॥ शिवावागादिकस्येव कर्तुं दोहविचक्रांगं ॥ चदनहिर्लगास्यललाहमूलनासिके १५॥ कामका
 मूल दुहस्यद्विहि वङ्गुलिचक्रांगं ॥ चतु वंगुलद्विचक्रस्य प्रसासिकायदि ॥ शिवावागादिकस्येव कर्तुं दोहविचक्रांगं ॥ चदनहिर्लगास्यललाहमूलनासिके १५॥ कामका
 नादवदिसर्वत ॥ सनमकचक्रं सस्यस्यतालो मूलकाकन ॥ हस्तकाकद्विहीयालुवा ॥ शिवावागादिकस्येव कर्तुं दोहविचक्रांगं ॥ चदनहिर्लगास्यललाहमूलनासिके १५॥ कामका
 नं ॥ चतुलांगुलसंयुक्तायां वादकाकनयेवच ॥ द्वादशमालाकाकस्यद्वयानूपचिह्नं ॥ निमेलानादिरागस्य मूलपत्रं हतिचिह्नं ॥ सावि
 ताकाकनालस्य वाहदोसंयमनउ ॥ वर्जयिहिमंगुल्यासो मयद्वयं कुरुमयांगं ॥ चतुलंगुलीयलुपासनायकश्च दशकं ॥ आसनासद्वि १ वद्वि
 हिमङ्गुलमङ्गुलं ॥ चतुमङ्गुलगहं श्रुतवस्तुद्विवाक्यं ॥ गङ्गी वाचजदवस्यद्वादशमालाकाकस्येव कर्तुं दोहविचक्रांगं ॥ चदनहिर्लगास्यललाहमूलनासिके १५॥ कामका
 ॥ सप्तपदमालास्य वाहदोसंयमनच ॥ वर्जयिहिमङ्गुल्यासो मयद्वयं कुरुमयांगं ॥ सावितालमयं कुरुताउदवापीनयस्य दश ॥ वर्जयिहिमङ्गुल्या

सन्धिसन्धिलुसर्वे १॥ जायजायध्वनीद्वीचटिचटिलुकिंकरी॥ घालवीरुसूनपंडुनवतानविचिगीतं॥ क्रमक्रमलयाकूचंमंगुलाचक्रदव
रानामध्यवर्जवानाहिजालकुराचिह्नितां॥ डिगीदीर्घमहादवाविवर्जंघस्येदवकीनेउच्चावस्मानुसुखमगिनानिनियतात्मन॥ धीगिहस्यमहादवा
नासाकभुदिमकुली॥ दन्तनाकासंगकचूषयदानकंसखातं॥ पञ्चाशुकागयचिह्निगिनाकुरुतथैवच॥ नियतंसिद्धिहानिलुमिदवचनमवगीत॥ डिगि
सूलेमहायागजघोपादादिगमुया१॥ मोनचिघ्नामोइवसाधकान्नियतात्मना॥ जीगिविधमहादायकवालदुर्गजलं॥ हवकअर्थहानिलुगीधुं
नान्येदसंगेय१॥ डिगिवक्त्रमहायागंलनकलेललाटकं॥ कलहाभकुपीबलुअचिबनेवसाधकं॥ जीगिहीनमहादाय३॥ उन्कायउवदयं॥ हवकअ
पयोनानांमयायकुनसंगेय१॥ कवलंहिन्ननासस्यकवर्धुअललाटकं॥ नाताविधंचमनसंयागीनानिनियतात्मन१॥ उद्ददहिस्वाप्तचनमा
संचहिन्नो१॥ हवकअर्थहानिलुस्वाभनेलरुसदा॥ उन्दीवादिअंगस्यअसखादायकीरुहं॥ वरुहिनादिमाजाम्यविपयोचिह्नमदया

॥ अथ संतापश्चत्वारिंशद्विंशतिदिनकृतं ॥ इति संकटापसंश्रयमन्त्रमन्त्रं ॥ मन्त्रं यन्निष्ठिपात्रकाग्रिया चक्रे ॥ यवपाणि महादायिनीकाग्रि
चारुभांग ॥ विनित्सर्वसौख्यचिह्नं सप्तमाहिकं ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णं संपूर्णं विधिदत्तं नं ॥ सोम्यासोम्यकुनूपस्यचिह्नं विधिदत्तं ॥ सोम्यासोम्यकुनूपकु
नोदं नोदरुयनक ॥ श्रीनवीनारुसंकाभारुसिंहिंगमायमाक्रान्ताक्रान्तागानदभंजिकपञ्चाविकार्यामडाचपुकिचिह्नपञ्चदशसमयीधना ॥ एवं
मूलावसंज्ञाकपाटं सर्वदहिभं ॥ चिह्नं दयप्रयागपुसर्वोचाक्रान्तचिह्ना ॥ अथाहं श्रीननंक्रान्तायागयगिनीनायकीनाक्रान्तं चलोनिमस्या
नितस्यानदविह्नकथा ॥ चिह्नं तानिचक्रानिउवयागकानिच ॥ उद्दामिदककुनदिह्नामन्यगंस्तु ॥ खर्वीचपुयागानस्तुन्यमकिह्नेवि
धिश्च ॥ त्वमं चिह्नं मालां खचरीचनकुसुमं ॥ वाचाशेषसूपात्मानिनाधसूपादुकि ॥ बहस्यं चिह्नं तानां च अतन्नालखनं स्फुटं ॥ नत्व
क्रान्तविस्वं दायकं नृक्षकनाश्यासर्वसंज्ञावयागात्मा चलोवचकुनात्मकां ॥ रामधनविद्येयं स्त्रियं सक्त्यं पदमाहुं गवागावगेविमिधं

923

चनसंरुवदिरुक्तुद्वयं पाणिमध्यस्थस्थानापंचरुत्तकात्मनाथ। स्वासचक्रंरुदाकस्यरुद्रपुरुत्तथागताधायमनादवनागाभाश्रु
नाविचक्रं॥ कयोहि॥ सर्वकारुच्युक्तिसेवेदहिनां॥ नवदावात्मकंयामंसाहिसत्वाचदुर्गं॥ नृवंकपाकस्तानिषदिगंरुवकसदाभा
यहदनविस्तृतगुणदायकृतीदं॥ १४॥ संध्युक्तयोगरूपमार्शचक्रिकावक्राभासमोर्गाभासंरुत्तंश्रुमागेरुवदोषकराविदुनाक्तस्यउद्धोता
चक्रनाभानिकारुगा॥ पाठाश्रुपाठावागस्यलज्जं॥ नाहिकामिकारुगेरुचिद्वानरुपदहिनां॥ उद्धोद्धोचक्रानुस्यगतागतिप्रकीर्तिताश्वायकाय
हावनाभमांकरुंस्यासिद्धदयता॥ चक्रयदिभक्तंरुत्तंननाभांरुपवर्हिनां॥ रुगवृद्धावस्यपयातानांमूर्धचरिष्यंकरुत्तं॥ अष्टोननकरावाताम
पातसर्वदहिनां॥ अन्त्यमिधिवानंजाडीसंचानकाविद्वं॥ सफाविंशतिकानारुक्रुहिकार्यंश्रुमक्रुका॥ विरुद्धिस्तंउयानारुक्रुकरुहिसाविनां
॥ वीर्योद्धिपहावसुसर्वापचावल्लुगं॥ सफुक्तिमत्तकमध्यहावयत्यववविदुगां॥ वजीरुमयोदिवीर्यंरुक्कपाकस्तानमावक्षान्॥ पक्षपायात्म

होमार्हगुणैवमतिशयं सुतकालचक्रकथाग्रहयादविगर्हि ॥ सर्वोऽयं वागमावर्तनघनहसमा ॥ वयसातपुषातनहसममहिताविधि
 २॥ प्रवलेज्जगलकस्यमज्जगमं च विचित्रं ॥ आदिकर्मिकमज्जगमं प्रविष्टादिकानयं ॥ सिद्धिर्माप्येकशीर्षं मज्जगमं विस्तार्यमाधय ॥ ३३ ॥
 ॥ अतिशयजगमाहिक ॥ प्रमहाकुरुगजप्रविष्टिचमज्जगमसुहावविधिलज्जगमासहिधयिगतिममपटल ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ अथ रुगगाह्यासीवज्जगमीमहापहा ॥ दशयज्जगमा न्यायं वागिनीनां लक्षं गुरु ॥ चयागिनिष्ठपाशननवनवेकं कस्य ॥ कर्मधर्मसम
 यज्जगममज्जगमं च कुरु ॥ मज्जगमं गोवेयातावीपप्रगन्धसुमचि ॥ पयायवगन्धसुमचि ॥ पयायवगन्धसुमचि ॥ दाकिनीपयिनीवेवलापारुवकिह
 हिनीयसंखिनीखगुलाहायुचिहिनीरुवपिनी ॥ चंडीतिस्त्रुपायलज्जगमसुविचक्रग ॥ पयिनीलज्जगमं वज्जगमं च मगुलाह
 किह ॥ अथ हिलपयाहनिनासिकाताममेखाकर्मपटल ॥ जातीचंयकगन्धसुमचि ॥ कर्पूलचन्दनगन्धपटल ॥ कदलद्वि

१२८

॥ मगताहिसमगन्धनीलायुदुर्लभं ॥ ३३ ॥ चन्द्रदलस्यमंगन्धसुमचि ॥ मल्लिकात्यवगन्धं च नाकावलिं कसनिहं ॥ कर्पूरगन्धकं
 यं कर्पूरकसंनिहं ॥ पाकलीमल्लिकागन्धं गगन्धं वज्जगमं ॥ पादोमेमल्लिकोमेनामालदलाका ॥ वामावलीसुधिवलीरुगगाह्या
 उगाहस्यसुधिवलीमल्लिकामल्लिकामिनी ॥ पयगन्धं ससुवापयवधनकामयह ॥ पयस्यगोकेगहसुनसंयुक्तमज्जगमं ॥ लज्जगमं
 अंगुलिपुडिपकोमयस्यमिनीतया ॥ अथ नक्तवंचुहसिनीलक्षं कथमासदगन्धसुमचि ॥ चक्रनासिका ॥ वामावलीमदनालागसुमचि
 याचपलाचपीडाहसुकोनयह ॥ उनसुहावधनागुकोकोस्यगहसिनी ॥ शिवसिधुलकंदलाग ॥ दालिं गग ॥ सुन ॥ मदनासुखस्यगंनखद
 न्दापयन ॥ नखकाकोयधद ॥ सावमसुवाहसिनी ॥ गीतनावादिहिवता ॥ प्रकालज्जगमं सपन्नाहसिनीचविधायक ॥ गणिनीलसुमचि
 दीर्घक ॥ दीर्घनासिकागनाहिकया नाहिसुलोसुतावा ना मरुला ॥ दधिइधराजनपियवकिं गवामहसुनगसुमचि ॥ दन्तपीडय

१२५

यश्च इयमप्यमश्वरी गमं नृकृन्दसंकाशं विरं सुखनूपिशीना वृक्षानां वाधिसत्त्वानां नाथानवज्ज्वा विशंगका ७७ संहागचक्रादशदलवर्कं कृतम्
 ७७ ज्ञानं कस्यार्धमशिवानेकुमारोवा मरुंशवर्तिनिवैरुवंश रुदयधर्मचक्रमष्टदलं विश्वदलपदं ॥ नाथ इकां नाथामस्यास्तिकश्याने स्याद्वर्ग
 ७७ प्रथमपुष्पात्सहस्रकावकास्यमध्यविह्वननिखादितं व्यापकं तथा ॥ स्वयं उह्वनमोधानं विह्वनं पवनमश्वनं ॥ नाहोचउपष्टिदलपदं नीलवर्क
 ७७ कर्मधर्मज्ञानं दीयकचमशियथा ॥ कस्याधर्मप्रथमपुष्पात्सहस्रकावकास्यमध्यविह्वननिखादितं व्यापकं तथा ॥ स्वयं उह्वनमोधानं विह्वनं पवनमश्वनं ॥ नाहोचउपष्टिदलपदं नीलवर्क
 ७७ नृशतयायनसहस्रकावकास्यमध्यविह्वननिखादितं व्यापकं तथा ॥ स्वयं उह्वनमोधानं विह्वनं पवनमश्वनं ॥ नाहोचउपष्टिदलपदं नीलवर्क
 ७७ यनयनहिरावनेनमनसंपुष्पात्सहस्रकावकास्यमध्यविह्वननिखादितं व्यापकं तथा ॥ स्वयं उह्वनमोधानं विह्वनं पवनमश्वनं ॥ नाहोचउपष्टिदलपदं नीलवर्क
 ७७ लं संवृष्टिर्वामगा ॥ दधस्काद्विकल्पकं वक्तिनानात्वसंघदनं ॥ व्यामप्यायसमस्तवस्तुसमस्तसंवादेकं चामरं ॥ अवंकर्ममज्ञायाउदया

[illegible]

॥ यागजापी ॥ जायेव सा स्यादिय यागिनी ॥ पश्चिमी सर्व काले दुःमहा मन्त्रा पग स्य ॥ १ ॥ वं मन्त्रा स्व हावाडु प्रकि मन्त्रा स्व हावकां ॥ यायस्य वर्धु गन्धं वसा
रु स्यात्तिनयं स्मृ कं ॥ यावादि वरुपया रायका मन्त्रिप हृदियी ॥ साधयदिमां मन्त्रा दुः सर्व सत्या यजो लय ॥ २ ॥ गाव ह्यन वायनां पविष्टं च उ मन्त्रु ल गवा
मनन सत्तवा सा यागिनी चक्र चिरुत ॥ वर्जगु क हिताना नी अचकं सर्व भद्रा ॥ की मोना गन वृद्धा नी साकला सत्य हागि कां ॥ ३ ॥ को कस्य उ चिरु स्य वः
द्रिं मधा रुका मजां ॥ कायि कं नृप कं नैव ऊरु कादि दुः नृप कं ॥ महा मेकुं नया लभ्य जी उरु वि सोपे कं ॥ नृपा नृप द वि रु या कलं सर्व अ वृद्ध कं ॥ प न
नृप क नाद जी ह्यप का वृद्ध मार्ग कं ॥ ४ ॥ उदिय सर्व सं वं प ह्य पा न मिता य च ॥ ५ ॥ वं सत्ता उ वं कलं या गि कल सति हा ॥ ह्य न चै कं मू द जी ना अ पि
प कि सर्व काम दे ॥ या गि नी चक्र मध्य म् स म्म का म उ नृप जां ॥ ६ ॥ मदा हा क कला ले पया न म्म क क मदा निय क हं ॥ जा इ य रु रु स्वा कं रु रु
रु स्वा हा ॥ ७ ॥ १ ॥ गाव ती य हं रु रु स्वा हा ॥ २ ॥ कि मन्त्रा ऊ ना जी जा म् रु कि य व प दां गाव रु सं स्ता ने कं वृ वं यथ ॥ सर्व या गि जी रा अ न न न न सं

वृक्षसंकुमंविन्दुपिपीतांशुःशुक्रपिपदावस्यपूर्वमास्थानियारतभाशुक्रपिपदांशुःशुक्रानजंयायांदितीयाकावरा। पुनोरुहीयन्कावरा
 नोचुर्ध्वाः। न्हीकावरा। नाहोपंचम्यांउकावराहृदयंयमकांउकावरकनसफम्यांमकावरा। गवश्रुम्यांमकावरा। कनकलनवम्यांमकाव
 रा। गवश्रुदगम्यांमकावरा। चक्रपीतकादसांमकावरा। काकमूलकादसांमकावरा। रुधादसांमकावरा। मर्दिचेरुदसांमकावरा।
 वरा। मदस्यवामदक्षिणपूरुमायांशुःशुक्रकावरा। सुहावागवश्रुपदावस्ययावदमावासिनायत्संकुमनंरुवक। वामेचक्रश्रुलिङ्गिप्रस
 रावरा। दक्षिणसूर्यकालिस्तुल्यहावरा। आधिसुहावरावसंकुमनंरुवक। यामाहसंचानरुदनसंकुमिषाउगननं। चक्रश्रुस
 र्यगुमसिधुनिगापेआकाशनिगोधरा। अनासमचिनासंकाशिषाउगविधीयक। निमिकल्यमहाशोर्य। आकांकासुनरुपवान्। आनन्द
 सोसुहावरावदहलेलितापमं। न्हाहृगवाचजीवनजाकिनीरुपागतवरा। सर्ववीनसमायायावजसुखरुपनंसुखं। ॥ ॥

१३१

न्हाहृगवाचजीवनजाकिनीरुपागतवरा। सर्ववीनसमायायावजसुखरुपनंसुखं। ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥
 थवलिगलंवायथाचदनेमर्वसरा। धर्मादयान्तर्गतंवेवलिंदयाद्येथाविधिराजकीमर्दिचेरुधागवश्रुकावरादिनकापनरा। समाधिमाला
 वधरुचपयहागुश्रुहापयतनावाहंवाध्यात्मिकं। कुर्यादवधनीयानिमालिखतु। नाहिमध्याध्वंयचपमलं। विकल्पयतुपंवातामि
 कामरुचसमवसंसर्वकोनयतु। सुखंयम। कदहनादेसर्वमासायनानिचेयहोलनंसुखचिह्नं। तापनंवागवादिनां। साधनंयवमात्मान
 ममनीकवर्गपनरा। ध्यानमज्ञासदागुपश्रुधियांनचानेयतु। आसक्तयप्रजाकिन्यावलिपूजायोगितरा। कलाश्रुतिगुनीतुल्यमध्यम
 यांशुश्रुतजगदहृदस्यपीयूषसहायतांचललाहृदरा। आवल्यवसंजामयति। आकाशयादाहृदिमक्तिगं। कनकल्यमंमूर्धोरुकाव
 रावरा। दगदिगलाकलुचिनयोगिन्याकाशिकहृदयं। मूर्धावलिदातयावामदक्षिणयागकरा। वामदक्षिणपाशिषाउमनदाकिनीसुखं। वलि

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

१३३

[illegible]

۱۳۴۰

सविष्णु मयनकूपप्रापनि शृङ्गागङ्गा नमज्ज नमहि मङ्गुलसिन्धुं कागङ्गा सूर्यो सूर्य सुसिन्धुं कागङ्गा धिष्ठिता नृपा पंचगव्यचिकवर्जं ध्यात्वा सूत्रं संहन
 धा पूर्णं कृत्य नीधत्वा धा उभेवर्षा कागङ्गा यदि दधवलां न क्वचिद्वह्निना न च दृष्ट्वा कलालवदना नाना कुसुमविभाजित मूर्ककण्ठैश्च चंद्रवि
 भाजिता ॥ कुरुवजा वलिद्वय मध्या कुरु कपालमाला वद्धिगिरि ॥ चक्षी कुशुलकणी च कर्म खलालं कुरु विलसत्किंपता का कल सुव
 क नपल्लव स्त्रितादपुष्पावज्ज ॥ ६४ ॥ सप्तपुष्पस्य हयासविधा यिनी ॥ अत्र सप्तनाथ नृकण्ठ कोट्यं कुरुवर्षा कणी कदम्ब नेगं नृपुष्प सानुशिवा
 विश्ववज्ज कनककलशमूल विनिर्गतं नृपुष्पं ॥ यद्विष्णो चित्तविश्वपताका विभाजितवा इदं नृपुष्पं सूर्यो सूर्यो चंद्रो गच्छ मां लागितं पूर्युपमराज
 नं धामय नीरा कुनदधि नमो ह्यं नृगन्धिरुपं चागसि गामाला ॥ पलविनी ॥ नृकूपप्रापनि सूर्यो सूर्य सप्तपुष्पमालिदप्रदस्त्वा विवस्त्रा प्रचयु
 सूर्यो प्रसासू नमो ममो लिनी ॥ पतिविम्बसमागंगलादि वस्यताग नाना निर्या होदरा दिङ्गज गदर्थय गंगे सूर्यो सुसी कागंधि स्थित सूर्यो सु

वज्रहृदयावज्रवाहीमात्मनं ध्यात्वा कुरु कुरु वीरवन्निजालसर्वसत्त्वान्कुरु पापलानिष्ठाया आत्मनि प्रवृत्तमरुतावती वज्रवाही
 सहकारं कुरु यो ह ॥ कुरु नृत्तनालो विष्णुपद्मवध शुभसूर्यमगुले गिरु कीर्ति का वंदे ह ॥ कुरु कुरु मातामकुं सुजाका वासिना च कुरु मग या रा
 नवदन विवदनिश्चाये ॥ वृद्धगणगुणमभि मकापधि चतुता बालिपि गभसु कलादिपे हा विमोदा पवाहिवि वनप्रवि सक्ति ॥ सुनवा सवा
 ह्यनदहनास्मिका ध्यात्वा कुरु ॥ कुरु उदीरु वन्नि संचादिरु गगन स्कां ह्यनदवी पूर्वता दहा ॥ पूर्वो कुरु दवी गधे वघाटि पन ॥ सुनपुत्रयित्वा शो
 कावमकुं पाथ पूर्व कं ह्या लो मे जा स्व हा ल लाट वा मो वा वरुं न्या मय न ॥ कुरु न के लो ली हा वा ह मका ह का वं कुरो कुरु ॥ कुरु य मे कुरु ॥ अयोग
 शुद्धा ॥ सर्वधर्मयोगा गुहा ॥ कुरु कुरु वीर संचादि नां गगन स्कां ॥ अजो ह्यादि रुपा गोता ना नी यति ॥ ये वा म कुरु कुरु पंच मथा गतात्मकला हो
 ॥ कुरु निर्मि क नाना रूप गणे स दं ग ये न व वीर वहा गी क ह्य निहि ॥ दवा सुवै श्या का का न प वा य हो ॥ कुरु कुरु म क पृ न क सु वी सुगधि

१३६

कुरु सप्रवर्धिरिधा यथा हि जा क मा उ श च्छा पि वा ॥ सर्वकथागता ॥ कथा हं स्त्रा पयि प्या मि शु द्धं दि व्य नि वा नि धा ॥ गम थ प ० कि रि वा त्मा न रि धि
 चो ग ॥ सर्वकथागता श्री विष्णु क समधि य ॥ नृत्त न ना धि द्या य तां विष्णु पद सूर्य स्का का ला धि दि क शि ल स्तं चि कथ क ॥ कुरु कुरु निर्मि क प च मु
 हि द वा रि ॥ कं नि मि क ॥ ना ना हि ध पू जा रि ॥ आत्मान म हि नू क वज्र सा ध क म ग ॥ म ता स्वा दं क्त्वा या व दि रुं ध्मा त्वा सु व र्धं सं ह न र्धं प र्व व ॥ कुरु
 दि दा ष र्ग हि कं म कुरु ज प्र कुरु ॥ कुरु य म कुरु ॥ श्री १ य दा उ कुरु कुरु मा ॥ कदा म कुरु ना रि रु कीं ता न क र्ता व्य पू जा प न र सु न र्ध प जि धा नं धि धा य पू ज ॥
 प रि धा म्य ग ता कुरु नं च डि धा च्छा यो द वा हं ॥ जा व मू च रु ने सर्व ध र्मा ॥ कुरु पा प न्ना य र्ध य था सु खं वि ह नं दि ति ॥ कुरु यं ग ता कुरु म कुरु ॥ अ ॥ अ ॥
 अं वज्र सत्त्व समय म नू पाल य वज्र सत्त्व ना प रि हृ द ॥ मि रु व म्मा ध्या म रु व स प्प ध्या म रु व श्रू न न का म रु व सर्व सि धि म प य द्धु सर्व क र्मा सु चि म चि रुं
 ॥ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ कुरु व च्छं कथा ग क वज्र मा म म च व जी रु व म हा स म य सत्त्व आ ॥ कुरु कुरु ॥ संध्या क व पि म ति दि द्या का व म हि म र्वा क स प जा दि

[illegible]

संज्ञादिमन्त्रिणाकथितोपायैव हृदयगतं समुत्पादिकं वक्ति। तस्य गन्धमाधुमपन्नगादयस्संनिहितानहवन्ति। अस्मिन्पदवन्पदवन्तां
अन्यथा मपि सर्वोपकनक्षसमर्थोहवन्ति। किंवेहं गकनमयापि जगधियाभम्भुश्रुतकृत्तनविजिफनकशा। अथमकुसलकृदंका
पनं नृदंपुष्टलाकसाधनं कृतं। यपुनरस्तिनक्षत्राभनक्षत्राकगुहोर्यकाहवन्ति। तेषां सहेवासिद्धिरष्टादिति। नृसाहगवान्यामिचज
वागहिनायकी। यससाधनलाकानां वज्रसत्वरसुखाधिकं। ॥ २३ ॥ अस्मिन्पदवन्तां कृतं यमहाकृतं पदवन्तां साधनलक
अविधिनिर्देशाद्यैः सति पदवन्तां ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ अथेत्यतमसर्वं सर्वार्थसाधनविधिं। सहासर्वोचनीकृतं
चतुर्नायकसुधावेषा। अथसत्ताचनीकृतं चतुर्नायकसत्तावकावधयवग्धविधिन्यामं। तत्पूर्वोक्तं कृतं अथानिष्यन्नेरगवन्तिपनं नक
दीजधिं नृपविष्ममहागानकवन्ति। अथसंपूज्यमुक्तिव्योक्तं। अथकृतं सादिगं अथिहं। अथनिर्यागाधमसकनारुजयापनि

हृदयार्थं विद्या गीतं कता सा दश विधिवत्सु विविधपात्रान् सव्यं कृत्वा कुम्भिन वा दयति यथा वदानियस्वस्वचिह्नं यथा यत्नं दशैरु मन्त्रं मालां तर्जनी
 दृष्ट्वा ॥ कुरु सं मरु निखं विह्वं विह्वं गलं न कुरु कामं दूषां को न पव पन्ध रूतं कन पदं जलिकं साधका नि मूखं किं वा मिमिति ॥ अथ दि
 ग्वं न मरु कगी तज वा गही ना दक्ष कर्हि कपा वध विशी मरु किचि न्सा वधं रुय किचि रेज वाना सा वध विधि ॥ अथ ता ह गव की नां शुक्र व
 शी र्भे स देव की नां महा श्रियो नां महा कं महा गुह्यं महा माया महं ध्वनीं ॥ १ ॥ लाय सं हन ख षां ॥ लायं रुज त पत्तर ॥ शुक्र का ना मि यं मा ता महा
 माय किचि च ॥ १ ॥ लाय जाग नी विद्यां प व द्यं महं ध्वनीं ॥ अथ विद्या त मा ज या विद्या साध के न ॥ स देव गंधर्व स य जा स न मानुषान् ॥ वि
 द्या धर्म पि गंधर्व वा ज सा न ग कि न्न ज्ञान ॥ व स मान ये कि रुतानि जल रुत ज्ञानि च ॥ महा ध्वनी कनी विद्या रुत ज्ञान कनी कथ मा ता ह न रुत न
 ये व विद्या सा द ना दि कं ॥ व र्ध्वा कर्षणे जं रुतं चान क विध कुरु रुतं ॥ पाणि का कुरु विद्या वा चा सिद्धि च साध के ॥ न ज पं न व नं रुत ना प वा सा वि

989

[illegible]

[illegible]

१४३

[illegible]

१४४

५० राजानमावजवाग्राहेनरुतिरुंजगत्सत्तासंवाधिवरुणमनद्वयस्त्राप्यामिऊगदाध्ववजवाग्राहिकास्त्रभामनान्कूलभगभन
दोस्त्रहृदिचन्द्रांकावजिगो८नरुतिगुर्वध्ववाधिसत्ताद्वयपापदशनादिकंकूर्याकृत्वाकृतानिबालमृगान्यतांहावधद्वयजंवीकृत्कृत्वा
दोभभभनाष्टकमध्यधर्मकाकुमप्रधम्मोदयोक्तगवधवदकचन्द्रस्त्रविशामसंप्रदस्त्रवकावजसंहवंहगवतीहावधद्वयवाहीपलया
नल्लहनिहंवादिउज्जैकवज्जोदकि॥८॥कजंयनीइष्टकजनवज्जिकांरामकपालस्वधाजधवां॥८॥वज्जानवायाकृतकं॥८॥प्याली८नसतोभुवं॥
दिगंवेवमृककभंखलुमसिगुमखलांडकुजलोववदनांजिनयाविश्ववज्जधवां॥८॥वज्जमालाकपानमृधजां॥८॥मृगुसुग्दामदहस्रहं॥८॥सर्वोत्तंका
नरामाहितां॥८॥सर्ववज्जहृद्यकावराचनकलां८॥८॥सर्वसिद्धिपरायकां८॥८॥नल्लहनिहंवादिउज्जैकवज्जोदकि॥८॥कजंयनीइष्टकजनवज्जिकांरामकपालस्वधाजधवां॥८॥वज्जानवायाकृतकं॥८॥प्याली८नसतोभुवं॥
८॥सादवंहावधनिखल्लेष्वस्त्रमाप्र्याग्गहावनयावित्रोमकुंजपहं॥८॥जंवीकृत्कृत्वाकृतानिबालमृगान्यतांहावधद्वयजंवीकृत्कृत्वा

[illegible]

१४५१

[illegible]

मिताहा मावसिदिहिः ॥ १ ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 लामरुह ॥ इत्यमाहपिनुनेकुवागवजममदसं ॥ यागिगतां च गच्छेत्तुं दानं स्तोत्रं सदा कुरु ॥ कायवाक्पुत्रं कुर्यादधर्मे स मोहिनी ॥ मेयकल
 कुकनकिमृदुतां न शक्यते ॥ २ ॥ इत्युवाच ॥ यमः ॥ वीरान्द्रुह्यादिमृदयकन ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 वकनचवीकथा ॥ पुत्रा लीपविमदात्रुद्रुवध सवीकथा ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 सवीकद्रुदसंभवावमिति ॥ नयद्रुद्रुवध ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 सर्वतथागाताहिधकेपदमाददं ॥ नयद्रुद्रुवध ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 दिग्यनकं विरावय ॥ रुद्रुवध ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन

१४३

पस्कन्धवज्रा ॥ नीवदनायां स ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 काहीमाहयस्यापिरुयं कवी ॥ पृथ्वीचपू ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 रव्याका ॥ रुद्रुवध ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 नयद्रुद्रुवध ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 मिनी ॥ कवमहिमहागु ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 चार्यद्रुद्रुवध ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन
 वन्धकमृदा ॥ रुद्रुवध ॥ मन्त्रायनवा राक्षसपुत्रावृत्तिना न ॥ चिह्नान्धक नवगमितायुतधामने ॥ विदिरुहान्द्रुह्यादिमृदयकन

۹۸۸

धीयाः श्रुवधूती श्रुमिहनाथ साधन सावित्री सदाशिव कर्म मन्त्रा मन्त्रावस्थां युगात्मा श्रुवसावकाशः सवर्गिकायमात्रे रुद्रवज्रवत्ता कुजनिजं गम
 हुकावस्तु वज्रस्य वसन्तं वत्सविहारः श्रुति संवृद्धं पदं मिहनाथ साधनं गमः सदेवाः सद्यः सदनं मूर्कं वा वासं विवागं सहजं पवनं सौर्यं पिताम
 धिसूत्रावहं पथानिशा शोहितं कि कश्चिद्विद्यां विवदपि कदिपक्रमं संप्रयदित कर्तुं कनकं धवलाहं च कार्मणं सत्वं रथा स्यात् गमः सत्वं रथं वसा
 गमं विषयं लं गमः दिनजा फूलं रती वावहनी नता विद्यदिकसारं यं वीर्यं मरुतः कस्याः वधि पाऊनाद ऊद्य मपि ह्यार्थे कति को यतादु पावया
 न्ति न माहया सवसने स ह्या मनास्व स्य ह्ना उत्यदिक म हावेनापुथ मरु के यो सधारेण स्वर्गां मन्त्रा मन्त्रा विगुडि माउ कवच सर्वं पदे वि
 ल्लवः पश्चाद् इत्युच्यते न ह्ना इति मन्त्रं जवे दार स्याद उत्यन्त्र कम नव सारि वदोध्य पात्स को सदाशिवः साधनं च वधा विविध कश्चि वने रु
 धिनां यकु मावाकं दाहं गमः विविध मध्यं कं जा गहारत्वा लाचि रु ४॥ गमं र्थं साधनं तु पवनं हि रुचि नाशु कप स र स गता काथो लाधिनं य

१४८

[illegible]

[illegible]

सर्वेष्वपि सहायितं ॥ १०३ ॥ राहुदमवाचरुगवाना इमनसहश्रुतं तापयेत्ता श्रेवकालिका तडु मांतव ॥ गभज्ज सिंह न क कुच कलि तथा
गया न गो एता वं ह्य यं भग्न ला वकु ने च पन जन ॥ सु हा विर हो व्य मानं त सम य श ग कि रू व न ॥ म या रि सा गा ति प्रा फ सं जी ति का न का
दि हि ४ ॥ रु ग व ता हा वि त न मृ त्य न द मि दं व च स्था न द कि पा ये मु रु व स्या स स मान का ४ ॥ १०४ ॥ रु ग वा स्था नि व ज जो की रु धा ग क ४
सर्वे वी न च नी वा मि द ड स ल प न मे र ॥ १०५ ॥ रा हु दि आ व ज वा दा हि क ल्य महा त कु ग ऊ या ग हा ते व ज वा ना रि डि या क वा र्धु वा भी ति वा
रा हा दी मं ना न क ल्य ॥ १०६ ॥ रा हु दि आ व ज वा दा हि क ल्य महा त कु ग ऊ या ग हा ते व ज वा ना रि डि या क वा र्धु वा भी ति वा
पु षं वा म पु षं वा म म दा रे ना वि ध त ॥ १०७ ॥ रा गु रु स स्व क १०९२ कि छु रे मा त क रु ग क द सा मि यां पूं थ कि धि अ सू ती न क उ अ मि क थ या रा
य था क र्मु मू रू ४ स म वा व स व वि धून ग सी म न हा ल्क न म र व मो र्णा त च ड प्र सी ॥ १०८ ॥ रा हु दान लि खि त म न पा ले म गु ल को रू म गु प म हा न ग न क र न

